सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 19 • अंक 9 • दिसम्बर 2022 • मूल्य : 20 रु.

देराउर दादावाड़ी (जयपुर) में दादा गुरुदेव के प्राचीन चरणों की प्रतिष्ठा

जहाज मंदिर में पूज्य गुरुदेव की पुण्यतिथि का आयोजन

।। श्री महावीर स्वामिने नमः ।।

।। तीर्थाधिपति श्री शांतिनाथाय नमः ।।

।। श्री स्तंभन पार्श्वनाथाय नमः ।।

अनंत लब्धिनिधानाय श्री गौतम स्वामिने नमः

खरतरबिरुदधारक आचार्य जिनेश्वरसूरिभ्यो नमः

दादा गुरूदेव श्री जिनदत्त-मणिधारी जिनचन्द्र-जिनकुशल-जिनचन्द्रसूरिभ्यो नमः ।।

पू. गणनायक श्री सुखसागर सद्गुरूभ्यो नमः

श्री जहाज मंदिर

(राजस्थान) में

पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.

की समाधि भूमि **जहाज मंदिर**

मांडवला में मूलनायक शांतिनाथ मंदिर प्रतिष्ठा की

24 वीं वर्षगांठ निमित्ते

आत्मीय आमंत्रण

भव्य मेले का आयोजन

आज्ञा प्रदाता

प. पू. गुरूदेव अवंति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर

श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

पावन ध्वजारोहण

संवत् 2079, माघ शुक्ला 14

शनिवार

दि. 4 फरवरी 2023

निवेदक

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट

जहाज मन्दिर

माण्डवला - 343042, जिला जालोर (राज.)

फोन : 096496 40451

mail :- jahaj_mandir@yahoo.co.in, Web. : www.jahajmandir.com

आगम मंजूषा

भगवान महावीर

विभूसा इत्थिसंगगी पणीयरसभोयणं।
नरस्सऽ त्तगवेसिस्स विसं तालउडं जहा।।

आत्मगवेषी पुरुष के लिए विभूषा, स्त्री का संसर्ग और स्वादिष्ट भोजन, तालपुट विष के समान हैं।

Personal adornment, contact with women, and very rich food are like deadly poison named Talput for a person who is seeking self-realisation.

अधिष्ठाता
खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 19 अंक : 9 5 दिसम्बर 2022 मूल्य 20 रू.

अध्यक्ष – उत्तमचंद रांका, चैन्नई

प्रधान संपादक : **श्रीमती पुष्पा ए. जैन**

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	: 21,000 रूपये
मानद संरक्षक	: 11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	: 2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	: 2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	: 1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	: 500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	: 200 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653
रुपये जमा कराने के बाद पेढ़ी में सूचना देना अनिवार्य है।

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
मोबाईल : 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com, www.jahajmandir.org

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	04
2. दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1	अमलनेर	05
3. दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1	अमरावती (दादावाड़ी)	06
4. विहार डायरी	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	08
5. गोत्र इतिहास	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	10
6. प्रिय आत्मन्	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	11
7. समाचार दर्शन	संकलित	13
8. जटाशंकर	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	34

विशेष दिवस

- 3 दिसंबर मौन एकादशी, श्री अरनाथ दीक्षा कल्याणक, श्री मल्लिनाथ जन्म-दीक्षा व केवलज्ञान कल्याणक, श्री नमिनाथ केवलज्ञान कल्याणक
- 6 दिसंबर पाक्षिक प्रतिक्रमण, श्री सम्भवनाथ जन्म कल्याणक
- 8 दिसंबर रोहिणी, श्री सम्भवनाथ दीक्षा कल्याणक
- 16 दिसंबर आचार्य श्री जिनहरिसागरसूरिजी म. 73वीं पुण्यतिथि, मेड़तारोड, फलोदी पार्श्वनाथ तीर्थ, धनार्क 09.56 से
- 18 दिसंबर श्री पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक
- 19 दिसंबर श्री पार्श्वनाथ दीक्षा कल्याणक
- 20 दिसंबर श्री चन्द्रप्रभस्वामी जन्म कल्याणक
- 21 दिसंबर श्री चन्द्रप्रभस्वामी दीक्षा कल्याणक
- 22 दिसंबर पाक्षिक प्रतिक्रमण, श्री शीतलनाथ केवलज्ञान कल्याणक, पू. उपाध्याय श्री क्षमाकल्याणजी म. की 206वीं पुण्यतिथि
- 28 दिसंबर श्री विमलनाथ केवलज्ञान कल्याणक
- 31 दिसंबर श्री शान्तिनाथ केवलज्ञान कल्याणक
- 1 जनवरी आचार्य श्री जिनआनंदसागरसूरि म. 62वीं पुण्यतिथि, पालीताना
- 2 जनवरी श्री अजितनाथ केवलज्ञान कल्याणक
- 4 जनवरी रोहिणी
- 5 जनवरी पाक्षिक प्रतिक्रमण, श्री अभिनन्दन स्वामी केवलज्ञान कल्याणक
- 6 जनवरी श्री धर्मनाथ केवलज्ञान कल्याणक

विज्ञापन हेतु ट्रस्टी श्री गौतम बी. संकलेचा चेन्नई से संपर्क करावे मोबाइल नंबर 94440 45407

नवप्रभात

मैं दु:खी हूँ। क्योंकि दु:खी होना मेरा स्वभाव हो गया है। जब गहराई में झांकता हूँ तो पाता हूँ कि दु:ख का कोई कारण नहीं है। जिन कारणों को मैं दु:ख का हेतु मानता हूँ, उन कारणों का मुझसे कोई संबंध नहीं है।

मैं तो परम सुख का भोक्ता हूँ। मैं परम सुखी हूँ। क्योंकि सुख के जो कारण है, वो मुझमें ही है। उन कारणों से मैं कभी अलग हुआ नहीं, अलग हो सकता नहीं, अलग होने की कोई संभावना भी नहीं।

क्योंकि सुख मेरा स्वभाव है। दु:ख पर-भाव से आता है।

जब स्वभाव में रहने से मैं सुखी होता हूँ तो क्यों पर-भाव में भटकता हूँ।

अपने स्वभाव से मैं कभी अलग हुआ नहीं।

और पर-भाव से अलग हुए बिना रह सकता नहीं।

पर-भाव में मैं कभी टिक नहीं सकता। हर पल मुझे वहाँ से विदा होना पडता है। मैं वहाँ टिके रहना चाहता हूँ। पर-भाव से अलग होना मुझे अच्छा नहीं लगता। पर उसमें सदा रह पाना मेरे हाथ में नहीं है।

मेरी सबसे बडी समस्या यही है कि जो हाथ में है, वह करता नहीं। जिसे करने के लिये मुझे किसी भी अन्य द्रव्य, स्थिति, परिस्थिति या पदार्थ की अपेक्षा नहीं है, फिर भी उस प्रयोग का पुरुषार्थ मुझसे नहीं होता। उस पुरुषार्थ में केवल एक कदम बढाना है... केवल दृष्टि मोडनी है... पर नहीं करता।

और सारा पुरुषार्थ उसके लिये करता हूँ, जिसका परिणाम शून्य ही आना है।

हाँलाकि प्रयत्न करते समय लगता है कि बस! मिलने ही वाला है... आने ही वाला है... सुखी होने ही वाला हूँ।

पर सारी मेहनत मृग मरीचिका की भांति व्यर्थ हो जाती है।

दौडा बहुत... थका भी बहुत.... पसीना बहाया भी बहुत... पर आंख खुली तो पाया, वहीं खडा हूँ, जहाँ से दौडना प्रारंभ किया था।

अपने स्वभाव में रमणता का पुरुषार्थ करो और हर पल परम आनंद का दिव्य अनुभव करो।

दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1

मंदिर-दादावाड़ी परिचय - 43

अमलनेर (दादावाड़ी)

–मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.
– साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म.सा.

महाराष्ट्र के अमलनेर नगर की आबादी वर्तमान में लगभग डेढ़ लाख है। पाटिल (कृषक) जाति की बाहुल्यता वाले अमलनेर नगर में जैनों के लगभग 500 परिवार रहते हैं। एक सौ आठ पार्श्वनाथ में से श्री गिरूआ पार्श्वनाथ परमात्मा की 500 से अधिक वर्ष प्राचीन प्रतिमा यहाँ बिराजमान हैं।

प्रवासी राजस्थानियों के यहाँ आने के साथ ही जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक खरतरगच्छीय राजस्थानी संघ यहाँ सक्रिय हुआ जिसके अंतर्गत न्यू प्लॉट एरिया में वासुपूज्य स्वामी का प्राचीन जिनालय है। जिनालय में दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि, श्री जिनचन्द्रसूरि की 50 वर्ष से अधिक प्राचीन चरण पादुका हैं।

इस दादावाडी का इतिहास आज से 87 वर्ष पुराना है। दादावाडी बनाने की प्रेरणा श्री संघ को तब मिली, जब इस क्षेत्र में आचार्य जिनकृपाचन्द्रसूरिजी म. के शिष्य पूज्य उपाध्याय श्री सुखसागरजी म. एवं पूज्य मुनि श्री कान्तिसागरजी म. का पदार्पण हुआ। उनकी पावन प्रेरणा प्राप्त कर श्री संघ ने योग्य भूमि की खोज प्रारंभ की। संघ के आगेवान श्री खेतमलजी कोठारी एवं श्री कंवरलालजी पारख के परिश्रम स्वरूप सन् 1937 में भूखण्ड खरीदा गया। और दादावाडी का निर्माण प्रारंभ किया गया। शिखरबद्ध वासुपूज्य परमात्मा का जिनमंदिर बना।

साध्वी श्री मणिप्रभा श्रीजी म. की प्रेरणा से दादावाड़ी का निर्माण प्रारंभ हुआ। उसकी प्रतिष्ठा साध्वी श्री मंजुला श्री जी म. आदि साध्वी वृन्द की निश्रा में पौष वदी 4 संवत् 2057 दिनांक 14.12.2000 को संपन्न हुई। प्रतिष्ठा के अवसर पर पंचाह्निका महोत्सव का आयोजन किया गया।

दादावाड़ी का हॉल लगभग 20 फुट गुणा 20 फुट का है। हॉल के मध्य में सामने तिगड़े में पश्चिममुखी तीन दादा गुरुदेव की प्रतिमा जी हैं। मूलनायक श्री जिनदत्तसूरीश्वर जी म.सा. की नूतन प्रतिमा 21 इंच आभामण्डल सहित की है। दाहिनी ओर दादा श्री जिनदत्तसूरि जी की 15 इंच ऊंची 50 वर्ष प्राचीन प्रतिमा है। दादावाड़ी प्रतिष्ठा से पूर्व यह प्रतिमा जिनालय में थी। प्रतिमा के बायें बाजू दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरीश्वर जी की 15 इंच ऊंची नूतन प्रतिमा प्रतिष्ठित है।

दादावाड़ी में दादा गुरुदेव तिगड़े के अतिरिक्त हॉल की दोनों दिशाओं में आमने-सामने देखते दो तिगड़े और हैं। गुरुदेव के दाहिने अर्थात् दक्षिणमुखी तिगड़े में प्रवर्तिनी वल्लभ श्री जी, प्र. ज्ञान श्री जी एवं प्र. जिन श्री जी की मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं। वहीं तिगड़े की पिछवाड़ी दीवार में चार अन्य साध्वीजी महाराजों की प्रतिमाऐं पट्टनुमा खुदी हुई हैं। दादा गुरुदेव के बायें अर्थात् उत्तरमुखी तिगड़े के मध्य में योगीराज शांतिसूरि जी विराजमान हैं तो आजू-बाजू अधिष्ठायक देव श्री नाकोड़ा भैरव एवं घंटाकर्ण महावीर की मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं।

दादावाड़ी के सामने ज्ञान वल्लभ विहार नाम से दो मंज़िला सुन्दर भवन है। दादावाड़ी एवं वल्लभ विहार के मध्य के स्थान को शेड डालकर भव्य व्याख्यान हॉल का

रूप दिया गया है। ज्ञान वल्लभ विहार का तल माला साधु-साध्वी उपाश्रय के रूप में एवं ऊपर बने दो हॉल एवं 6 कमरे धर्मशाला रूप में उपयोग में लिये जाते हैं।

वार्षिक ध्वजारोहण प्रतिवर्ष पौष वदी 4 को होता है।

वर्ष 2005 के चातुर्मास में दादा गुरुदेव महापूजन के दौरान केशर वर्षा को भक्तों ने प्रत्यक्ष देखा। इसके अतिरिक्त भी चातुर्मास में दो बार दादावाड़ी की छत एवं प्रांगण में केशर वर्षा हुई।

हर पूर्णिमा को वार्षिक ध्वजारोहण के समय एवं दादा गुरुदेवों की पुण्यतिथि आदि उत्सवों के दौरान दादा गुरुदेव पूजा का आयोजन होता है।

मनवांछित पार्श्वनाथ तीर्थ नेर यहाँ से मात्र 50 कि.मी. दूर पड़ता है। लौकिक देवता शिरडी के साई बाबा का प्रसिद्ध स्थान यहाँ से 100 कि.मी. दूर है तो भ्रमणीय स्थल सप्त सुंगी माता की दूरी भी लगभग 100 कि.मी. है।

❋

पता : श्री वासुपूज्य भगवान जैन मंदिर एवं दादावाड़ी

न्यू प्लॉट एरिया, पो : अमलनेर - 425 401 जलगाँव (महाराष्ट्र) दूरभाष : 02582-275307, 275409

मंदिर-दादावाड़ी परिचय - 44

कुनबी पटेल जाति की बाहुल्यता के साथ सात से आठ लाख की आबादी वाले अमरावती नगर में बर्तन बाजार स्थित जिनालय श्री जैन श्वेताम्बर बड़े मंदिर के रूप में जाना जाता है।

नगर के मध्य में तिराहे पर दूर से चमकता उपाश्रय का गुलाबी भवन नज़र आता है। उसी के पास गुलाबी मार्बल पत्थर एवं सफेद तोरणद्वार के साथ महलनुमा खिड़की-झरोखों से युक्त जिनालय बना हुआ है।

जिनालय में प्रवेश करते ही 5 फुट तल मुख्य द्वार के समानान्तर है। शेष सम्पूर्ण जिनालय 3 फीट ऊंचे प्लेटफार्म रूपी तल पर बना हुआ है। मूल गंभारे में सुपार्श्वनाथ प्रभु की 14 इंच लम्बी व 10.5 इंच चौड़ी प्रतिमा आभामण्डल युक्त परिकर के साथ विराजमान है। 147 वर्ष प्राचीन मंदिर का गंभारा द्वार मात्र 5 फुट ऊंचाई लिये हुए है। इस मंदिर का जीर्णोद्धार हो चुका है। प्रतिष्ठा मुनि पीयूषसागर जी म. एवं साध्वी श्री मणिप्रभा श्री जी म. की निश्रा में सम्पन्न हुई है।

मूलनायक प्रभु के गंभारे के दाहिने प्रदक्षिणा का स्थान छोड़ते हुए अलग गंभारे जैसा लम्बा स्थल है, जिसमें सामने की दीवार में तिगड़े रूपी तीन गोखले हैं। इनमें से मध्य गोखले में आचार्य श्री जिनहर्षसूरि जी के हाथों प्रतिष्ठित 147 वर्ष प्राचीन दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि जी की चरण पादुका एवं चित्र विराजमान है। दायें गोखले में गणधर गौतमस्वामी एवं बायें गोखले में दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि जी के चित्र रखे हुए हैं।

मंदिर जी में गणधर गौतम स्वामी, दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि एवं दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि जी की प्रतिमायें प्रतिष्ठित हैं।

वर्तमान मध्य गोखले में 5 इंच गुणा 6.25 इंच गहरे स्थान के मध्य 4.5 इंच गोलाकार उभरे हुए कमल पर 7 से.मी. लम्बे व 9 से.मी. चौड़े दादा

गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि जी के चरण उत्कीर्ण हैं। सफेद मार्बल पाषाण के इन चरणों पर कोई लेख नहीं है।

पूर्वमुखी दादा गुरुदेव चरण पादुका वाले गंभारे की एक दीवार पर बहुत ही सुंदर कार्य किया हुआ है। गंभारे से आगे दाहिनी दीवार में मणिभद्र जी एवं रंगमंडप में श्री महाकाली माता एवं पद्मावती माता अधिष्ठायक देव-देवी रूप में विराजमान हैं।

जिनालय में मूलनायक प्रभु गंभारे के बायें तरफ नागेश्वर पार्श्वनाथ भगवान की खड़ी प्रतिमा प्रतिष्ठित है।

पुराने नगर में मंदिरमार्गी आम्नाय के 150 घरों में 60 घर खरतरगच्छ के हैं।

200 स्थानकवासी, 25 तेरापंथी परिवारों के साथ 700 से अधिक दिगम्बर जैनों के घर हैं।

बड़े मंदिर से 3 कि.मी. दूर छत्री तालाब (वड़ाली तालाब) भ्रमणीय स्थल है। तीर्थ स्थल के रूप में मुक्तागिरी 52 जिनालय दिगम्बर तीर्थ यहाँ से 60 कि.मी. दूरी पर है।

बस स्टैण्ड 3 कि.मी. दूर है तो अमरावती रेलवे स्टेशन की दूरी मात्र 2.5 कि.मी. है। निकटतम नियमित हवाई अड्डा नागपुर ही है, परन्तु बड़नेरा के पास बेलोरा की हवाई पट्टी मात्र 15-16 कि.मी. पड़ती है।

वर्तमान में राजा पैठ स्थित विशिष्ट दादावाड़ी के साथ नगर में दादा गुरुदेव के अनेक धाम बन गये हैं परन्तु करुणा बरसा कर हमारे पूर्वजों को जैनत्व प्रदान करने वाले प्रथम दादा गुरुदेव का यह 150 वर्ष पुराना श्रद्धास्थल अमरावती नगर में दादा गुरुदेव के प्रथम आस्था केंद्र के रूप में संस्थापित है।

❋

पता : श्री जैन श्वेताम्बर बड़ा मंदिर,
बर्तन बाजार, अमरावती - 444 601 (महाराष्ट्र) दूरभाष : 0721-2572301, 2660463

जहाज मंदिर में गुरु सप्तमी का आयोजन

मांडवला 15 नवंबर। पूज्य गुरुदेव आचार्य प्रवर श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. की समाधि भूमि जहाज मंदिर मांडवला में मिगसर वदि 7 ता. 15 नवम्बर 2022 को गुरु महाराज की 37वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में गुरु सप्तमी का आयोजन किया गया।

इस आयोजन को अपनी निश्रा प्रदान करने के लिये पूजनीया प्रखर व्याख्यात्री साध्वी श्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या एवं पूजनीया साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म.सा. की चरणाश्रिता पूजनीया साध्वी श्री विनीतयशाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री प्रशमिताश्रीजी म. पू. साध्वी श्री अर्हम्निधिश्रीजी म. पू. साध्वी श्री भव्यप्रियाश्रीजी म. ठाणा 4 बालोतरा चातुर्मास पूर्ण करके उग्र विहार कर जहाज मंदिर पधारे।

ध्वजवंदन किया गया। पूज्य आचार्यश्री के चित्र पर वासक्षेप पूजन का लाभ श्री किशनलालजी पारख परिवार बालोतरा वालों ने लिया। पुष्पहार अर्पण करने का लाभ ट्रस्ट के कार्याध्यक्ष चौहटन बाडमेर निवासी श्री द्वारकादासजी डोसी ने लिया। धूप पूजा का लाभ श्री मांगीलालजी संखलेचा बाडमेर ने, दीपक पूजा का लाभ सुरेशकुमारजी दांतेवाडिया ने लिया। पू. साध्वीजी म. को कामली का लाभ श्री गजेन्द्रजी संखलेचा बालोतरा ने लिया।

इस अवसर पर पू. साध्वी श्री अर्हम्निधिश्रीजी म. ने कहा- पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री का व्यक्तित्व अपूर्व था। उन्होंने पूरे भारत की पद यात्रा करके भव्यजनों को वीतराग परमात्मा के शुद्ध धर्म से जोडा व शासन प्रभावना की।

गुणानुवाद सभा के पश्चात् गुरु पद पूजन पढाया गया जिसका लाभ श्री पुरुषोत्तमजी सेठिया परिवार ने लिया। सभा का संचालन मंत्री श्री सूरजमलजी देवडा धोका ने किया। इस अवसर पर बालोतरा, बाडमेर, सिणधरी आदि क्षेत्रों से श्रद्धालुजनों का आगमन हुआ था।

133

विहार डायरी

– आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

(गतांक से आगे)

कोट्टूर की प्रतिष्ठा की संपन्नता के पश्चात् हॉस्पेट की ओर विहार किया था। वहाँ मोकलसर का पालरेचा परिवार बडी संख्या में रहता है। पालरेचा परिवार के साथ मेरा सांसारिक संबंध है। मेरा ननिहाल पक्ष है। कोट्टूर एवं हॉस्पेट के बीच में मरियम्मनहल्ली गाँव है। जहाँ सिवाना, मांडवला आदि क्षेत्रों के 12 से 15 घर हैं।

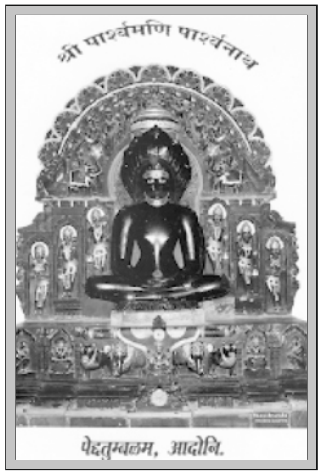

मरियम्मनहल्ली गाँव पहुँचने पर श्री संघ की बैठक का आयोजन किया। और सर्वसम्मति से जिन मंदिर निर्माण का संकल्प लिया गया। यहाँ के श्री संघ में दो श्रावक बहुत सक्रिय हैं। मांडवला निवासी श्री रमेशजी सालेचा एवं मोकलसर निवासी श्री जगदीशजी कोठारी! दोनों ने सकल संघ को साथ लेकर जिनमंदिर निर्माण का संकल्प लिया।

हम हॉस्पेट पहुँचे उससे पूर्व ही सोमपुरा ने मानचित्र बना कर अर्पण कर दिया। गाँव वालों के साथ चर्चा करके मानचित्र के अनुसार कार्य करवाने का निश्चय किया गया।

हॉस्पेट के श्री बाबुलालजी गिरधारीलालजी पालरेचा का यहाँ की राजनीति में काफी वर्चस्व है। वे बीजेपी से जुडे हुए हैं। उनकी भावना मुंबई चातुर्मास के अवसर पर प्रकट हुई थी कि उन्हें जिनमंदिर एवं दादावाडी का निर्माण करना है। इस हेतु एक विशाल भूखण्ड उन्होंने अर्पण किया था। जिनमंदिर दादावाडी सकल श्री संघ के सहयोग से निर्मित होगी।

जिनमंदिर व दादावाडी के भूमिपूजन, खनन मुहूर्त्त एवं शिलान्यास समारोह का मुहूर्त्त अर्पण करने व निश्रा प्रदान करने हेतु श्री बाबुलालजी आदि विनंती कर रहे थे।

एक ही दिन में प्रातः भूमिपूजन व खनन मुहूर्त्त करना था। उसके तीन चार घंटों के पश्चात् शिलान्यास विधान होना था। मुहूर्त्त 28 मई का आया था। हमने 27 मई को हॉस्पेट में प्रवेश किया था।

28 मई को सुबह भूमिपूजन व खनन मुहूर्त्त का विधान किया गया। लगभग 5 घंटों के पश्चात् शिलान्यास विधान संपन्न हुआ था।

हॉस्पेट से विहार कर दूसरे दिन अर्थात् 29 मई 2004 को हम्पी पहुँचे। हम्पी क्षेत्र का पुरातत्त्व व धर्म के दृष्टिकोण से अपना अलग महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

यहाँ प्राचीन अवशेषों, खण्डहरों में पूर्व में यहाँ 150 जैन मंदिर होने के प्रमाण प्राप्त हुए हैं, जिनकी झलक वर्तमान में स्थित जीर्ण-शीर्ण मंदिरों से प्राप्त हो जाती है।

यह क्षेत्र रत्नकूट के नाम से प्रसिद्ध है। खुदाई में बहुत-सी जैन प्रतिमाएँ प्राप्त हुई हैं, जो कमलापुर म्यूजियम तथा अन्य स्थानों पर प्रदर्शित की हुई हैं। अध्यात्म, साधना एवं शिल्पकला का यह महत्वपूर्ण क्षेत्र वर्ल्ड हेरिटेज केन्द्र के रूप में घोषित तथा संरक्षित है।

मुख्य मार्ग से कुछ कदम भीतर श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम बना हुआ है, जिसकी स्थापना लगभग 1960 में हुई थी। यह आध्यात्मिक ऊर्जा का केन्द्र है। प्राचीन गुफा में छोटा-सा कक्ष निर्मित है, जिसमें चन्द्रप्रभस्वामी की चल प्रतिमा स्थित है। तीन-चार पंचधातु की प्रतिमाएँ हैं।

दादावाड़ी एक अलग परिसर में निर्मित है। श्रीमद्

राजचन्द्र एवं श्री सहजानंद गुरु मंदिर के पास में ही दादावाड़ी अवस्थित है जिसमें दादा गुरुदेव की जिनदत्तसूरीश्वरजी म.सा. की सफेद मार्बल की विशाल प्रतिमा कमलाकार आसन पर आसीन है।

हम्पी में दो दिन रुके थे। ध्यान साधना की दृष्टि से यह अद्‌भुत क्षेत्र है। इस आश्रम की गुफा में सहजानंदजी म. ने लम्बे समय तक साधना की थी। वे खरतरगच्छ की परम्परा में दीक्षित हुए थे। बाद में वि. 2004 के मोकलसर चातुर्मास में उन्होंने रजोहरण का त्याग कर मयूरपिच्छी धारण की थी। वे वाहन विहार भी करते थे। बाद में उन्होंने हम्पी आश्रम की स्थापना की। वहाँ वे आत्म साधना में रत रहते थे।

हम्पी से विहार कर हम कम्पली, सिरगुप्पा, आदोनी होते हुए 5 जून 2004 को पेद्‌दतुम्बलम् अर्थात् पार्श्व मणि तीर्थ पहुँचे। इस तीर्थ के निर्माण की गाथा अलौकिक है। यहाँ जमीन की खुदाई में पार्श्वनाथ परमात्मा की विशाल प्रतिमा प्राप्त हुई। इस पर टंकित शिलालेख के अनुसार लगभग 800 से भी अधिक वर्ष प्राचीन है। इस तीर्थ का निर्माण गणिनी प्रवरा श्री सुलोचनाश्रीजी म. तपोरत्ना सुलक्षणाश्रीजी म. की प्रेरणा से हुआ है।

प्रतिमाजी काफी समय पूर्व गाँव वालों को मिली थी। प्रतिमाजी प्राप्त होने की खबर जब सर्वत्र प्रसारित हुई तो कई संगठनों, आचार्य भगवंतों ने प्रयास किया कि प्रतिमाजी हमें प्राप्त हो जाये। पर गाँव वालों ने स्पष्ट इन्कार कर दिया।

उन दिनों साध्वी रत्ना श्री सुलोचनाश्रीजी म. सुलक्षणाश्रीजी म. का विहार इसी क्षेत्र में हो रहा था। उन्होंने जब प्रतिमाजी की प्राप्ति के संबंध में सुना तो दर्शन की उत्कण्ठा लिये साध्वीजी म. पेद्‌दतुम्बलम्

गाँव आये। साध्वीजी म. ने इष्ट देव व उपकारी गुरुदेव का नाम स्मरण कर प्रतिमाजी के दर्शन किये व गाँव वालों को बुलाया। साध्वीजी म. ने सबके समक्ष अपनी भावना प्रस्तुत करते हुए कहा– हमारी भावना है कि इसी गाँव में विशाल तीर्थ बनाया जावें। इस हेतु यह प्रतिमा अर्पण कीजिये।

गाँव वालों ने उनकी बात एक मिनट में स्वीकार कर ली। साध्वीजी म. ने अपने गुरु महाराज का उपकार माना। प्रतिमाजी प्राप्त करने के पश्चात् ट्रस्ट का गठन किया गया व तीर्थ निर्माण का कार्य प्रारंभ हुआ।

हम पार्श्वमणि तीर्थ पहुँचे। साध्वी रत्ना श्री सुलोचनाश्रीजी म. आदि ठाणा वहीं बिराजमान थे। हमने निर्माणरत जिन मंदिर का अवलोकन किया। मन अत्यन्त प्रमुदित हुआ। काफी ऊँचाई लिये बहुत विशालता के साथ मंदिर का निर्माण हो रहा है। शृंगार चौकी, त्रिचौकी, खुला रंगमंडप, बंद रंगमंडप, कोली मंडप, विशाल गर्भगृह आदि का कार्य देखते ही बनता है।

5 जून 2004 को हम पहुँचे थे। यहाँ एक बालिका की दीक्षा का आयोजन था। 6 को वर्षीदान का वरघोडा और 7 को दीक्षा! सिंधनूर निवासी कुमारी रेखा नाहर की भागवती दीक्षा संपन्न हुई। इनकी बडी बहिन (साध्वी प्रियस्वर्णांजनाश्रीजी) की दीक्षा इन्दौर में संपन्न हुई थी।

दीक्षा के अवसर पर बाहर से बडी संख्या में लोगों का आना हुआ था। साथ ही एक वर्ष पूर्व दीक्षित साध्वी श्री प्रियज्ञानांजनाश्रीजी म. एवं साध्वी श्री प्रियदक्षांजनाश्रीजी म. की बडी दीक्षा भी संपन्न हुई थी।

(क्रमशः)

गोत्र इतिहास
42

नाहर गोत्र का इतिहास

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

इस गोत्र की उत्पत्ति परमार क्षत्रियों से हुई या मूंधडा माहेश्वरियों से इस संबंध में मतभेद हैं। प्राय: इतिहासकार इस गोत्र की उत्पत्ति पंवार क्षत्रियों से मानते हैं।

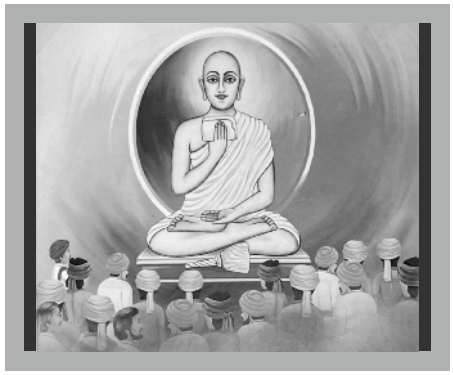

इस वंश में प्रताप नामक व्यक्ति हुए जिनकी 35वीं पीढी में आसधीर नामक व्यक्ति हुए। जनश्रुति है कि भगवती देवी ने बाघ का रूप धारण कर देपाल के पुत्र आसधीर का उनकी माता की गोद से अपहरण कर लिया और अपना दूध पिलाकर उसे पाला। देपाल ने बहुत खोज की पर बालक नहीं मिला।

तभी दैवयोग से नगर में आचार्य मानदेवसूरि पधारे। देपाल ने जब उनकी महिमा सुनी तो वह दौडा-दौडा गुरुदेव के पास गया और अपनी विपदा की बात निवेदित की।

गुरुदेव ने कहा- आप वीतराग परमात्मा के शुद्ध धर्म का स्वीकार करो...! देव, गुरु और धर्म की शरण स्वीकार करो...! नवकार महामंत्र को धारण करो...!

गुरु महाराज ने जैन धर्म का स्वरूप समझाया, जिसे श्रवण कर देपाल प्रभावित हुआ। उसने शीघ्र ही श्रावक धर्म को स्वीकार कर लिया।

गुरुदेव ने जाप करके देपाल से कहा- दक्षिण दिशा में जाओ, पेड के नीचे बालक आसधीर सुख से बैठा मिलेगा।

देपाल लोगों के साथ दक्षिण दिशा में गया। वहाँ उसने बालक को एक सिंहनी के पास बैठा देखा। वह शासन देवी थी जो सिंहनी के रूप में उपस्थित थी।

देपाल पहले तो डर गया। उसने जब सिंहनी के चेहरे पर करुणा के भाव देखे तो नवकार मंत्र का स्मरण करते हुए वह आगे बढ़ा। सिंहनी के पास जाकर बोला- मैं आचार्य मानदेवसूरि का श्रावक हूँ। बालक लेने के लिये आया हूँ।

सिंहनी ने तुरंत बालक देपाल को सौंप दिया। देपाल बालक को लेकर अपने घर आया। गुरु महाराज के उपकार का स्मरण कर वह परिवार सहित उनके पास गया। गुरु महाराज ने परमात्मा महावीर की वाणी सुनाकर जैन धर्म के सिद्धान्तों का वर्णन किया। उनके उपदेशों से प्रभावित होकर देपाल ने जैन धर्म स्वीकार कर लिया।

चूंकि आसधीर सिंहनी अर्थात् नाहर के पास मिला था। इस कारण गुरु महाराज ने देपाल परिवार को नाहर गोत्र दिया। इनकी 47वीं पीढ़ी में अजयसिंहजी हुए जिन्होंने मारवाड में अपना निवास बनाया। यहाँ से इनके वंशज श्री शेसमलजी भीनमाल गये। काफी वर्षों के बाद इनके वंशज राघरिया ढेलाना चले गये। जगत सेठ के आग्रह से इनके वंशज खडगसिंहजी का परिवार मुर्शिदाबाद चला गया। वहाँ से अजीमगंज में यह परिवार बसा।

नाहर गोत्र में रायबहादुर सिताबचंदजी ख्यातिप्राप्त श्रावक हुए हैं जिन्होंने जैन मंदिर, धर्मशालाऐं, स्कूल भवन आदि का निर्माण करवाया। आपके पुत्र श्री पूर्णचंदजी नाहर इतिहास व पुरातत्त्व के विद्वान् व्यक्ति थे। श्री पूर्णचंदजी ने कई ऐतिहासिक ग्रंथों का संपादन किया था। इन्होंने जैसलमेर आदि कई नगरों की प्रतिमाओं के शिलालेखों का संग्रह करके 'जैन शिलालेख संग्रह' के नाम से तीन भागों में प्रकाशित करवाया था।

(शेष पृष्ठ 30 पर)

पत्र में लेख

प्रिय आत्मन्

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

प्रिय आत्मन्!

तुम्हारा पत्र मिला है। मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव हुआ है कि तुमने मेरे पत्र को बार-बार पढा है।

निश्चित ही उस स्वाध्याय ने तुम्हारे हृदय में परमात्मा के दिव्य स्वरूप को जानने और फिर पाने की ललक जगाई होगी।

पहले तुम स्वतंत्र की परिभाषा समझ लो, फिर अगले स्टेप्स के बारे में बताऊँगा। हम अपने आपको स्वतंत्र अपने मन और इच्छाओं के आधार पर मानते हैं।

जब मैं अपने मन से चलता हूँ... अपनी इच्छाओं के आधार पर चलता हूँ... तो मैं अपने आपको स्वतंत्र समझता हूँ।

जबकि हकीकत में स्वतंत्र शब्द का अर्थ है- अपनी आत्मा की स्वतंत्रता! आत्मा को स्वतंत्र करना। अभी तो आत्मा बंधी है। कर्मों से बंधी है। पुण्य पाप से बंधी है। आत्मा स्वतंत्र कहाँ है? वह तो जन्म मरण के चक्कर से बंधी है। उस स्वतंत्रता को पाना है, जिसमें आत्मा पर किसी का बंधन न हो।

तुम अपनी बाह्य स्वतंत्रता समाप्त करने का यत्न करो। तभी अन्तर की स्वतंत्रता प्रकट होगी। बाहर से तुम बंधे हो नाम से... गोत्र से... काया से...!

विलीन करो। समर्पित हो जाओ। परमात्मा के प्रति अपने समर्पण को प्रकट करो। मैं कुछ नहीं हूँ... जो है मेरे परमात्मा है...! इन भावों में डुबकी लगाओ।

तुम अगले स्टेप्स के बारे में जानना चाहते हो। पूर्व पत्र में लिखे तीनों स्टेप्स के बारे में बहुत गंभीरता से विचार करना। क्योंकि वे बहुत मुख्य हैं। परिचय, प्रेम और भक्ति तीनों एक दूसरे से जुडे हैं। एक के आने के बाद दूसरा दौडा चला आता है। परिचय होने के बाद प्रेम न हो, यह संभव नहीं। और प्रेम की पूर्णता में भक्ति की वीणा बजती ही बजती है।

श्रीमद् देवचन्द्रजी महाराज ने परमात्मा महावीर के स्तवन में एक अद्‌भुत पंक्ति लिखी है-

स्वामि गुण ओलखी स्वामीने जे भजे।

दर्शन शुद्धता तेह पामे।

परमात्मा के गुणों का परिचय प्राप्त करके जो परमात्मा की स्तवना करता है, वह अपने सम्यग्दर्शन को परम निर्मल बना देता है।

वर्तमान में तुम चारों ओर नजर उठाकर देखोगे तो पाओगे कि धर्म का कोई भी कार्यक्रम हो, उसमें भक्ति होती ही है। बडे बडे संगीतकार आते हैं। बहुत सारे म्युजिशियन्स आते हैं। ढोल ढमाके के साथ जोरदार भक्ति होती है। फिल्मी रागों पर स्तवन गाये जाते हैं। लोगों को बडे पसन्द आते हैं।

पर तुम देखना- जब किसी फिल्मी तर्ज पर कोई धर्म का गीत गाया जाता है तो क्या तुम्हें उस तर्ज वाला फिल्मी गीत याद नहीं आता?

तो तुम्हारा मन धर्म के उस गीत के बोल सुनता है या फिल्मी गीत के शब्दों में खोता है?

यहाँ भक्ति की बात थोडी अलग है। इस भक्ति को बहुत अच्छी तरह समझ लेना है। भक्ति के शब्दों में परमात्मा के गुणों को पिरोया जाता है। शब्द होठों से निकलते हैं, हृदय परमात्मा के स्वरूप में बहता है।

ऐसी भक्ति का परिणाम परिवर्तन है।

4. परिवर्तन

अब तुम्हें परमात्मा का परिचय मिल गया है। हृदय प्रीति से भर गया है। हर पल मन भक्ति करना चाहता है अर्थात् परमात्मा में डूबना चाहता है। तो उस भक्ति का

परिणाम तुम्हारे जीवन की हर क्रिया में प्रकट होने लगता है। उसी का नाम परिवर्तन है।

जबान वही है, पर अब तुम्हारी भाषा बदल गई है।

भोजन तो करते हो पर खानपान बदल गया है।

आंखें वही है, पर दृष्टि बदल गई है।

अब वह हर पल प्रसन्न रहता है। अनुकूलता में भी और प्रतिकूलता में भी! क्योंकि वह जानता है कि सारी अनुकूलता प्रतिकूलता बाहर की दुनिया की है। मेरे अन्तर में अब केवल मैं नहीं हूँ, मेरे साथ परमात्मा है। मैंने परमात्मा को और उनके दिव्य वचनों को अपने हृदय में पूर्ण रूप से बिठा दिया है।

मैं अब जानता हूँ कि बाहर सब निमित्त हैं। उपादान तो मेरा अपना है। सुख मिले चाहे दु:ख मिले... सब खेल मेरे अपने पुण्य पाप का है। मैं इनके उदय में समभाव में जीता हूँ। न तो सुख में इतराता हूँ... न दु:ख में घबराता हूँ।

इसलिये मैं अब बाह्य स्थितियों के कारण चल-विचल नहीं होता। मैं स्थिर हो गया हूँ। अपने में... अपनी आत्मा में... अपने परमात्मा में... अपने स्वभाव में... अपने अथाह आनंद में...।

पूरी दिनचर्या बदल गई है। अब तुम जो भी करते हो, परमात्मा को याद रखकर करते हो।

ऐसे ही जैसे कोई व्यक्ति है। उसे अपनी मां से बहुत प्रेम है। वह मां को हर पल प्रसन्न रखता है। तो क्या वह व्यक्ति वैसा कोई भी काम करेगा, जो मां को पसन्द हो। जिस काम से मां नाराज हो जाये।

ऐसा संभव नहीं कि व्यक्ति कहे कि मैं मां को प्रेम बहुत करता हूँ पर काम उनकी इच्छा के सर्वथा विपरीत करता हूँ। यदि ऐसा कोई करता है तो समझना चाहिये कि उसका प्रेम झूठा है।

लेकिन तुम्हारा प्रेम तो सच्चा है। परिवर्तन बहुत आसान हो गया है। परिवर्तन में आनंद आने लगा है। पहले मैं शरीर के आधार पर जीता था। अब मैं परमात्मा के आधार पर जीता हूँ। यही परिवर्तन है।

5. परिणति

और जब परिवर्तन आ गया तो परिणाम मिलना ही है। परिणाम मेरे सामने हैं। हाँलाकि मुझे परिणाम की चिंता नहीं है। क्योंकि वह निश्चित है। मुझे तो बस प्रेम और भक्ति की दिव्य धारा में परिवर्तन के साथ जीना है। परिणति तो मिलने ही वाली है। बल्कि कभी-कभी मैं सोचता हूँ, कारण में कार्य का आरोप कर दिया जाये तो परिवर्तन ही परिणति बन जाती है। भगवती सूत्र के प्रथम शतक के प्रथम उद्देशक का नौवां सूत्र याद आता है-

चलमाणे चले।

जिसने चलना प्रारंभ किया, समझो चला। परमात्मा के वचन हृदय में उतर गये तो समझो कि काम हो गया... सिद्धि मिल गई।

इसी प्रक्रिया को शास्त्रकारों ने अनुष्ठान की संज्ञा दी है। शास्त्रों में चार अनुष्ठानों का वर्णन है-

1. प्रीति अनुष्ठान 2. भक्ति अनुष्ठान 3. वचन अनुष्ठान और 4. असंग अनुष्ठान!

प्रीति और भक्ति को समझना सरल है। वचन अनुष्ठान का अर्थ होता है- परमात्मा के वचनों को जीवन में धारण करना। और उसी का परिणाम असंग अनुष्ठान है। वचन जब आचरण का विषय बनते हैं तो असंगता पैदा होती है। असंगता अर्थात् अनासक्ति! संसार में रहकर संसार से अलग! प्रवृत्ति है, पर किसी भी प्रवृत्ति में न राग है, न द्वेष! केवल अपनी चेतना में जीना। परभाव से विरत होकर स्वभाव में सतत रमणता का अनुभव करना।

ये ही वो स्टेप्स हैं जो आत्मा को परमात्मा बनाते हैं। तुम्हें बनना है। परमात्मा होने के लिये ही तो तुम इस जीवन में आये हो। अपने अन्तर को जागृत करना है। स्वाध्याय सतत करना।

मानसरोवर जयपुर में सुमतिनाथ मंदिर प्रतिष्ठा संपन्न

जयपुर 28 नवंबर। पूजनीया प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म. की शिष्या पू. प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा से मान सरोवर जयपुर में नवनिर्मित श्री सुमतिनाथ प्रभु के शिखरबद्ध मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा पू. गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. की पावन निश्रा में मिगसर सुदि 5 सोमवार ता. 28 नवम्बर 2022 को शुभ मुहूर्त में अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुई।

इस मंदिर का निर्माण श्री सुमति कुशल सज्जन सेवा ट्रस्ट पालीताना के तत्त्वावधान में संपन्न हुआ।

समारोह का प्रारंभ 21 नवम्बर 2022 को कुंभ स्थापना, दीप स्थापना से हुआ। ता. 22 व 23 को विविध प्रकार के पूजन पढ़ाये गये।

ता. 24 नवम्बर को पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपतिजी पू. गणि श्री मयंकप्रभसागरजी म. आदि मुनि मंडल का प्रवेश हुआ। ता. 24 से च्यवन कल्याणक आदि विधानों का प्रारंभ हुआ।

ता. 26 को अध्यात्म योगी मुनि श्री महेन्द्रसागरजी म. मनीषसागरजी म. आदि का प्रवेश हुआ।

ता. 27 को दीक्षा कल्याणक का भव्य वरघोड़ा संपन्न हुआ। रात्रि में अंजन विधान संपन्न हुआ। ता. 28 को प्रातः शुभ मुहूर्त में परमात्मा की प्रतिष्ठा संपन्न हुई।

मूलनायक श्री सुमतिनाथ परमात्मा को भराने, प्रतिष्ठा, ध्वजा तथा कल्याणक विधान व फलेचुन्दडी का लाभ जयपुर निवासी श्री सुरेशकुमारजी सिद्धार्थ कुमारजी बेंगानी परिवार ने लिया। बेंगानी परिवार के भावों की जयपुर वासियों सहित चतुर्विध संघ ने भूरि भूरि अनुमोदना की।

मुख्य स्वर्ण कलश का लाभ श्री अतुलजी पटोलिया ने लिया।

श्री सुमति कुशल सज्जन सेवा ट्रस्ट पालीताना ने इस मंदिर का निर्माण करवाकर श्री श्वे जैन संघ, मान सरोवर को समर्पित किया।

ता. 29 को द्वारोद्घाटन व गुरुदेव की पूजा के आयोजन के साथ महोत्सव पूर्ण हुआ।

यह ज्ञातव्य है कि यहाँ प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा से निर्मित दादाबाड़ी की प्रतिष्ठा 4 वर्ष पूर्व पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपतिश्री के कर कमलों से ही संपन्न हुई थी।

वर्षगांठ सम्पन्न

पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य उपाध्याय प्रवर श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा-3 की पावन निश्रा और पू. गणिनी सुलोचनाश्रीजी म. की सुशिष्या प्रियस्नेहांजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-4 की पावन सानिध्यता में अक्कलकुवा और वाण्याविहीर संघ में ध्वजारोहण वर्षगांठ महोत्सव सानंद सम्पन्न हुआ।

अक्कलकुवा में दादावाड़ी के प्रांगण में मूलनायक आदिनाथ परमात्मा की तीसरी वर्षगांठ और वाण्याविहीर में मूलनायक संभवनाथ दादा की 24वीं वर्षगांठ का मंगल विधान विशाल जनमेदिनी के बीच परम उल्लास और हर्ष के साथ संपन्न हुआ।

देराउर में प्रतिष्ठा संपन्न

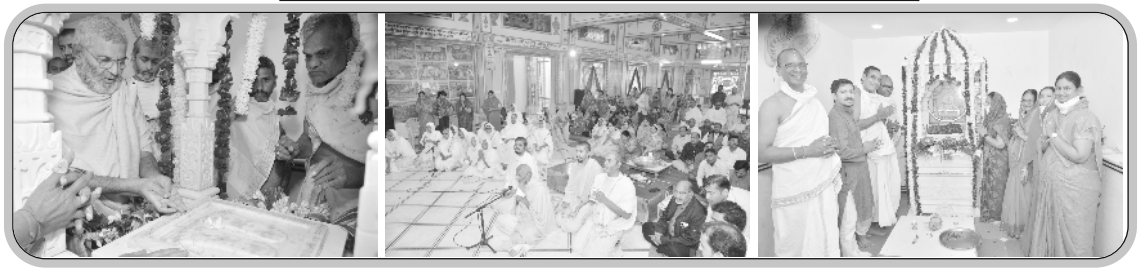

जयपुर 20 नवंबर। दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि की स्वर्गस्थली देराउर की पावन स्मृति में जयपुर नगर के पास ही देराउर के नाम से निर्मित दादावाडी परिसर में श्री देराउर पार्श्वनाथ परमात्मा का भव्य जिन मंदिर है जिसमें विशाल खडी प्रतिमा बिराजमान है। इस मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. (तत्कालीन उपाध्याय) की पावन निश्रा में सन् 1999 में संपन्न हुई थी।

जिनमंदिर निर्माण से पूर्व यहाँ जिनकुशलसूरि दादावाडी का निर्माण हुआ, जिसमें चारों दादा गुरुदेव व आचार्य अभयदेवसूरि की खडी प्रतिमाऐं बिराजित हैं।

साथ ही पाकिस्तान स्थित देराउर जहाँ गुरुदेव का स्वर्गवास हुआ था, वहाँ अग्निसंस्कार स्थल से पवित्र मिट्टी लाई गई, जिसे यहाँ एक रजतमय कलश में स्थापित किया गया है।

ता. 13 नवम्बर 2022 को यहाँ दादा जिनकुशलसूरि के जन्मतिथि के उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी भव्य मेले का आयोजन हुआ। दादा गुरुदेव की बडी पूजा पढाई गई। उसका व स्वामिवात्सल्य का लाभ श्री सुमीतजी भंसाली परिवार ने लिया।

इस अवसर पर पूज्य गुरुदेवश्री ने अपने प्रवचन में कहा- पाकिस्तान स्थित देराउर तो हम जा नहीं सकते। पर वहाँ से पवित्र मिट्टी लाकर यहाँ देराउर तीर्थ निर्माण का सपना जिन्होंने देखा- श्री भागचंदजी छाजेड, उनकी परिकल्पना की जितनी अनुमोदना की जाय, कम है।

यह दादा गुरुदेव का चमत्कार ही है कि वहाँ से लायी गई मिट्टी ने अपना वर्ण बदल दिया है। वह सोने के वर्ण की हो गई है।

ता. 20 नवम्बर 2022 को इसी दादावाडी में रूपनगढ से प्राप्त दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि के प्राचीन चरणों की प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेवश्री की पावन निश्रा में संपन्न हुई। दादावाडी के पीछे वाले विशिष्ट कक्ष में बनी नई देवकुलिका में इन चरणों को बिराजमान किया गया। इन चरणों की मूल प्रतिष्ठा चतुर्थ दादा गुरुदेव श्री जिनचन्द्रसूरि द्वारा वि. सं. 1656 में संपन्न हुई थी। प्रतिष्ठा के लाभ के लिये 11-11 हजार के कूपन वितरित किये गये थे। जिसकी लॉटरी निकाली गई। प्रतिष्ठा का अनमोल लाभ श्री विमलजी झाडचूर परिवार को मिला।

साथ ही वर्षों से जिन चरणों पर पूजा आयोजित होती है, उन चरणों की भी प्रतिष्ठा की गई। जिसका लाभ बाडमेर जयपुर निवासी श्री मिश्रीमलजी-सौ. भगवती देवी पुत्र श्री भंवरलालजी बोहरा परिवार ने लिया।

स्वामिवात्सल्य व बडी पूजा का लाभ श्री ऋषभजी चौधरी परिवार ने लिया।

पूज्यश्री का जयपुर में विचरण

चातुर्मास पूर्ण होने पर पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्यश्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा कार्तिक पूर्णिमा ता. 8 नवम्बर 2022 को मोहनवाडी से विहार कर संघ अध्यक्ष श्री प्रकाशचंदजी लोढा के निवास स्थान पर पधारे। वहाँ पूज्यश्री का कार्तिक पूर्णिमा की महिमा पर प्रवचन हुआ।

ता. 9 को विहार कर पूज्यश्री श्री महावीरजी डागा परिवार के निवास पर पधारे। जहाँ पूज्यश्री का प्रवचन संपन्न हुआ।

वहाँ से विहार कर पूज्यश्री श्री मिश्रीमलजी बोहरा व श्री ललितजी हुण्डिया के यहाँ पगले करते हुए श्यामनगर सोडाला पधारे। जहाँ दो दिवसीय प्रवास में प्रवचनों का आयोजन हुआ।

ता. 11 नवम्बर की शाम पूज्यश्री हेमचंदजी बैराठी के निवास स्थान पर पधारे।

ता. 12 नवम्बर को विहार कर पूज्यश्री त्रिवेणी नगर होते हुए मानसरोवर मंदिर पधारे। जिनमंदिर का अवलोकन किया। शाम को पूज्यश्री विश्वासजी जैन के निवास स्थान पर बिराजे।

ता. 13 को देराउर पधार कर ता. 14 से 16 तक पूज्यश्री जवाहर नगर मंदिर बिराजे।

ता. 14 को प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. के 64वें संयम दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का भव्य आयोजन हुआ।

ता. 15 को पूज्य गुरुदेव आचार्य प्रवर श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. की 37वीं पुण्यतिथि का आयोजन हुआ। ता. 16 को जवाहर नगर संघ मंत्री श्रावक प्रवर श्री नितिनजी दुगड के यहाँ प्रवचन का आयोजन हुआ।

ता. 17 को पूज्यश्री मालवीय नगर वासुपूज्यजी मंदिर पधारे जहाँ पूज्यश्री का प्रवचन हुआ। रात्रि प्रवास प्राकृत भारती एकादमी स्थल पर हुआ। ता. 18 व 19 को पूज्यश्री मोतीडुंगरी स्थित दादावाडी बिराजे। ता. 18 को प्रवचन व 19 को अठारह अभिषेक का भव्य कार्यक्रम हुआ। साथ ही माणकरत्न से निर्मित परमात्मा को बिराजमान किया गया।

ता. 20 को विहार कर पूज्यश्री देराउर पधारे। ता. 21 से 23 तक पूज्यश्री मोहनवाडी बिराजे। ता. 23 की शाम को विहार कर श्री प्रकाशचंदजी लोढा के निवास स्थान बिराजे। ता. 24 को मानसरोवर मंदिर की प्रतिष्ठा हेतु प्रवेश हुआ।

जयपुर में गुरु सप्तमी का आयोजन

जयपुर 15 नवंबर। पूज्य गुरुदेव अर्वांति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा, पूजनीया मरुधर ज्योति साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा एवं पूजनीया प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा की पावन निश्रा में पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य प्रवर श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. की 37वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में श्री जवाहर जैन श्री संघ द्वारा ता. 15 नवम्बर 2022 को गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पूज्य आचार्यश्री ने कहा- मुझ पर गुरुदेव का परम उपकार है। उन्हें कभी भी विस्मृत नहीं किया जा सकता। उन्होंने जो वात्सल्य और जो बोध दिया, वही मेरे जीवन की पूंजी है।

पू. मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. ने कहा- मैं वैरागी अवस्था में जहाज मंदिर रहा था। वहाँ मैंने गुरुदेव की साक्षात् कृपा प्राप्त की थी।

पू. साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म. ने कहा- जयपुर में पूज्य आचार्यश्री का जब चातुर्मास था, उस समय हमारा भी चातुर्मास यहीं था। समय की पाबन्दी उनका विशिष्ट गुण था। मैंने यह उनसे ही सीखा है। उस समय उनकी आज्ञा से मुझे बोलने का अवसर मिला था।

पू. प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. ने कहा- पूज्य आचार्यश्री के मुझ पर अगणित उपकार हैं। उनके उपकारों को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता।

पू. साध्वी श्री जागृतदर्शनाश्रीजी म. ने गुरुदेव के गुणों का वर्णन किया। संचालन संघ मंत्री श्री नितिन दुगड ने किया।

पू. मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. के आचारांग सूत्र के योग पूर्ण

जयपुर 24 नवंबर। पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में उनके शिष्य पू. मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. ने जयपुर चौमासे में आचारांग सूत्र के दोनों श्रुतस्कंधों के योग एक साथ पूर्ण किये।

आचारांग योग में प्रवेश आसोज वदि 9 सोम ता. 19.9.2022 को हुआ। 66 दिन चले इस योगोद्वहन की पूर्णाहुति मिगसर सुदि 9 गुरुवार ता. 24 नवम्बर 2022 को मानसरोवर सुमतिनाथ मंदिर प्रतिष्ठा महोत्सव के बीच संपन्न हुई। ता. 24 नवम्बर को चतुर्विध श्री संघ की साक्षी में अनुज्ञा नंदी का विधान किया गया। मुनि भगवंत व साध्वीजी म. ने वासपूर्ण डालकर तथा श्रावक श्राविकाओं ने अक्षतों से बधाया।

आचारांग योग पूर्ण करने से पू. मुनिजी आचरिक हो गये हैं। इस अवसर पर पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपतिश्री ने फरमाया- साधु साध्वी जी भगवंतों को आगम पढ़ने का अधिकार योगोद्वहन करने के बाद ही प्राप्त होता है। महानिशीथ सूत्र तक के योग करने वाले मुनि ही उपधान करा सकते हैं। बड़ी दीक्षा करने का अधिकार भगवती सूत्र तक के योग वहनकर्त्ता को प्राप्त होता है। पूर्व में मुनि श्री समयप्रभसागरजी म. व मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. द्वारा आचारांग सूत्र तक के योग किये गये हैं।

आचारांग सूत्र के योग में पू. गणि श्री मयंकप्रभसागरजी म., पू. गणि श्री मेहुलप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री मयूखप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री मुकुन्दप्रभसागरजी म., पू. मुनिश्री मृणालप्रभसागरजी म., पू. मुनिश्री मुकुलप्रभसागरजी म., सभी का क्रिया कराने, कालग्रहण में, दांडीधर, संघट्टा लेने आदि में पूरा-पूरा सहयोग रहा। नंदी विधि में पू. साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा, पू. प्रवर्तिनी शशिप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा का सानिध्य प्राप्त हुआ।

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपतिश्री का विहार कार्यक्रम

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. आदि ठाणा ता. 11 दिसम्बर 2022 को जयपुर मोहनवाडी अरिहंत वाटिका की प्रतिष्ठा संपन्न करवाकर ता. 13 दिसम्बर को विहार कर कोटा होते हुए झालरापाटण पधारेंगे, जहाँ प्राचीन चरणों का उत्थापन किये बिना जीर्णोद्धारकृत दादावाडी में ता. 1 जनवरी 2023 को प्रतिष्ठा करायेंगे। वहाँ से विहार कर भोपाल पधारेंगे, वहाँ से छत्तीसगढ की ओर विहार होगा।

कुशल वाटिका में अट्ठम तप तेले की आराधना 17 दिसम्बर से होगी

बाड़मेर 24 नवम्बर। बाड़मेर-अहमदाबाद रोड़ स्थित प्रवर्तिनी प्रमोदश्रीजी म.सा. की समाधि भूमि कुशल वाटिका में पार्श्वनाथ भगवान के जन्मकल्याणक के उपलक्ष में प्रथम बार त्रिदिवसीय अठम तेले की तपस्या का आयोजन 17 दिसम्बर से शुरू होगा। पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञा व आशीर्वाद से पू. बहिन म. साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा से व माताजी म. साध्वी रतनमालाश्रीजी आदि ठाणा-3 की पावन निश्रा तेले के आराधकों को पौष वदि अष्टमी 16 दिसम्बर को उत्तर पारणा, पौष वदि नवमी 17 दिसम्बर से 19 दिसम्बर तक अठम तप की आराधना, 20 दिसम्बर पौष वदि बारस को तपस्वियों का पारणा होगा। त्रिदिवसीय कार्यक्रम में भक्ति भावना का कार्यक्रम होगा और विधि-विधान करवाया जायेगा।

24500 कैरेट वजनी माणक की मूर्तियां संघ को समर्पित

जयपुर 26 नवंबर। नवरत्नों में से एक माणक से बनी ध्यान मुद्रा में विराजमान भगवान महावीर स्वामी और इन्द्र इन्द्राणी की मूर्तियों की विधि विधान से पूजा के बाद मोतीडूंगरी दादाबाड़ी में विश्व प्रसिद्ध जहाज मंदिर के अधिष्ठाता, खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. ने स्थापित किया। श्री श्वेताम्बर जैन श्रीमाल सभा को अपने निवास में रखी इन मूर्तियों को राजस्थान उच्च न्यायालय से सेवानिवृत्त न्यायाधीश जे. के. रांका व उनके परिवार ने समर्पित किया है। आचार्य के सानिध्य में मूर्तियों को स्थापित किया गया। इस मौके पर प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री मणिप्रभा श्रीजी म.सा. व अनेक साधु-साध्वियां भी मौजूद रहे।

इस मौके पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए गच्छाधिपति श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. ने कहा कि मूर्तियों को दर्शनार्थ समाज को समर्पित कर रांका परिवार ने बहुत पुण्य का कार्य किया है। अब इस परिवार के साथ समाज के अन्य लोग भी इन विशेष मूर्तियों के दर्शन वंदन का लाभ उठा सकेंगे, जिससे दर्शनार्थियों का सम्यक्त्व निर्मल होगा और उनके साथ रांका परिवार को भी इसका माध्यम बनने का लाभ मिलेगा।

इस मौके पर जस्टिस (से.नि.) जे.के. रांका ने बताया कि इन प्रभावशाली मूर्तियों का लाभ समाज जन को मिल सके, इस भावना के साथ उन्होंने श्री श्वेताम्बर जैन श्रीमाल सभा के अध्यक्ष मनोज धांधिया व सचिव धर्मेन्द्र टांक से अनुरोध किया था। उन्होंने कहा कि सभा की सहमति के बाद आज परिवार सहित करीब 24,500 कैरेट वजन की इन मूर्तियों को समाज को समर्पित करने में अपार प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। कार्यक्रम के बाद रांका परिवार की ओर से ही गौतम प्रसादी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में जस्टिस (से.नि.) जसराज चौपड़ा व न्यायिक सेवाओं से जुड़े अनेक अधिकारी व अधिवक्ता और शहर के गणमान्य लोग मौजूद रहे।

चौहटन में चातुर्मास परिवर्तन

चौहटन 8 नवंबर। महातपस्वी मुनिराज पू. यशोहीरविजयजी म. अपने उपाश्रय से पुखराज भंवरलालजी धारिवाल के यहाँ विहार कर रात्रि विश्राम किया। धारीवाल परिवार ने गुरुदेव का वधावना किया। तत्पश्चात उपस्थित जनसमुदाय ने गुरुदेव के श्रीमुख से मांगलिक का श्रवण किया। वयोवृद्ध पू. गुरुदेव चौहटन में स्थायी विराजमान है। वहीं चातुर्मासार्थ विराजित प.पू. हेमप्रभाश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी कल्पलताश्रीजी म. आदि ठाणा 7 ने हरीश कुमार शंकरलालजी बोथरा परिवार की विनंती पर स्थान परिवर्तन उनके निवास पर किया। बोथरा परिवार ने गुरुवर्याश्री की आगवानी की। जैन श्री संघ के सैकड़ों महिला पुरुष उपस्थित रहे।

इस दौरान प्रवचन में फरमाया कि कार्तिक पूर्णिमा के दिन पालिताना तीर्थ पर द्राविड़ व वारिखिल्लजी के साथ 10 करोड़ साधु मोक्ष सिधारे थे। साध्वी शिलांजनाश्रीजी म. ने भक्ति के बारे में बताया।

अपना घर भगवान को अर्पित कर
किराए के आवास में जाएगा चौरड़िया परिवार

जयपुर 12 नवंबर। 'तेरा तुझको अर्पण' की तर्ज पर त्रिवेणी नगर जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ के अध्यक्ष ने अनूठी पहल करते हुए अपने निजी आवास को जैन मंदिर बनाने के लिए संघ को समर्पित कर स्वयं परिवार सहित किराए के मकान में जाने का शनिवार को निर्णय लिया। मौका था शनिवार सुबह त्रिवेणी नगर जैन श्वेताम्बर संघ के अध्यक्ष प्रमोद चोरड़िया के आवास पर विश्व प्रसिद्ध जहाज मंदिर के प्रतिष्ठाता आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. के आगमन का।

आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. व उपस्थित संघ को त्रिवेणी नगर क्षेत्र में जैन श्वेताम्बर मंदिर नहीं होने के कारण निवासियों के धर्म आराधना से वंचित रहने की जानकारी देते हुए कहा कि संघ पदाधिकारियों के साथ क्षेत्र में निवास कर रहे श्रावक-श्राविकाओं की यहां मंदिर बनवाने की प्रगाढ़ इच्छा थी। सभी लोग काफी समय से यहां मंदिर के लिए जमीन की तलाश भी कर रहे हैं, लेकिन विभिन्न कारणों के कारण यह तलाश पूरी नहीं हो सकी। अब मंदिर के लिए जमीन की समस्या के समाधान के लिए प्रमोद चोरड़िया कुछ घोषणा करना चाहते है।

चोरडिया ने अपने सम्बोधन में अपना निजी आवास ही जैन मंदिर निर्माण के लिए संघ को समर्पित करने की घोषणा कर दी। चोरड़िया की इस घोषणा के बाद वहां मौजूद क्षेत्रीय विधायक अशोक लाहोटी सहित अन्य लोगों के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। चौरड़िया ने आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. को मंदिर के लिए नींव (खात) का मुहूर्त देने का आग्रह किया, जिससे मौजूदा आवास को हटाकर मंदिर निर्माण की नींव रखी जा सके। आचार्यश्री ने चौरड़िया के इस आग्रह को स्वीकार कर शीघ्र ही खात मुहूर्त प्रदान करने की सहमति दी। घोषणा के बाद दूसरी बड़ी घोषणा उनके पुत्र सिद्धार्थ चौरड़िया ने अपने परिवार की ओर से मंदिर निर्माण कार्य कराए जाने की भी कर दी।

उन्होंने कहा कि यह सभी कार्य उनकी धर्मनिष्ठ माता मंजू चोरड़िया की प्रेरणा से हो रहा है। आचार्यश्री ने सभी परिवार जनों को आशीर्वाद प्रदान करते हुए उनके इस अद्‌भुत त्याग की प्रशंसा की। मंदिर निर्माण कार्य की जिम्मेदारी प्रमुख जौहरी विमलचन्दजी सुराणा की सहमति के बाद उन्हें सौंपी गई। इस मौके पर मौजूद क्षेत्रीय विधायक अशोक लाहोटी ने जैन मंदिर निर्माण में क्षेत्र से सभी लोगों के सहयोग का वादा किया।

श्री जैन श्वे खरतरगच्छ संघ बोरीवली की स्थापना शंकर घीया बने अध्यक्ष

चतुविध संघ की निश्रा में श्री गीतांजलि संघ बोरीवली के प्रांगण में श्रीगच्छाधिपति आचार्य श्री मणिप्रभसूरीजी म.साहेब की प्रेरणा से साध्वी श्री मारवाड़ ज्योति गच्छ गणिनी श्री सूर्यप्रभा श्री जी म. साहब एवं खानदेश रत्ना साध्वी श्री पूर्णप्रभा श्री जी म. सा की शिक्षाएं साध्वी श्री हर्षप्रज्ञा श्री जी, श्री अभिनंदिता श्री जी, श्री नयनदिता श्री जी, श्री प्रेयनदिता श्री जी म.सा. की निश्रा में खरतरगच्छ संघ का गठन हुआ सर्व सिमितिश्री शंकर लाल जी घीया को बोरीवली खरतरगच्छ संघ का अध्यक्ष चुना गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री जज साहब राजेंद्र जी कोचर, अ. भा. खरतर. प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री प्रकाश जी सुराणा, मुंबई खरतर. के संस्थापक अध्यक्ष श्री प्रकाश जी कानूगो, वर्तमान अध्यक्ष श्री मांगीलाल जी जैन, भूतपूर्व अध्यक्ष श्री अमृत जी कटारिया एवं भिवंडी संघ के अध्यक्ष श्री अनिल जी छाजेड़ एवं भायंदर संघ के श्री मांगीलाल जी मालू, श्री मुनेश जी छाजेड़ एवं श्रीमान श्री बाबूलाल जी छाजेड़, अ. भा. युवा परिषद के उपाध्यक्ष श्री प्रदीप जी श्रीश्रीमाल एवं श्री कांतिलाल जी बोकड़िया, श्री सोहन जी सेठिया, श्री चंपालाल जी वाघेला एवं कई संघो से आगेवान श्रावक पधारे सभी अतिथियों का संघ द्वारा बहुमान किया गया।आदरणीय जज साहब श्री राजेंद्र जी कोचर एवं श्री प्रकाश जी कानूगो द्वारा कार्यकारिणी को शपथ दिलाई गई। इस अवसर पर पधारे हुए मुंबई खरतरगच्छ संघ, भिवंडी खरतरगच्छ संघ, भायंदर खरतरगच्छ संघ एवं बोरीवली खरतरगच्छ संघ द्वारा संघ पूजन किया गया। सर्व समिति से श्री शंकर लाल जी को अध्यक्ष चुना गया, वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री अनिल जी पारख उपाध्यक्ष श्री कुशल जी गोलेछा, सचिव प्रकाश जी बोथरा, सह सचिव योगेश जी सोरेया, कोषाध्यक्ष रतन जी पारख सह कोषाध्यक्ष संजय जी गोलेछा एवं श्री मदन जी छाजेड़, श्री अजीत जी कवाड़, श्री मिश्रीमल जी छाजेड़, श्री पवन जी बोथरा, श्री राहुल जी मेहता, श्री राकेश जी मेहता, श्री जगदीश जी संकलेचा, श्री बाबूलाल डोसी कार्यकारिणी सदस्य चुने गए अंत में सभी पधारे हुए मेहमानों को तथा खरतरगच्छ युवा परिषद की सेवाओं की अनुमोदना करते हुए धन्यवाद दिया गया।

स्वाध्याय सुवास उपधान तप एक अविस्मरणीय दस्तावेज

मुनि मृगांकप्रभसागर

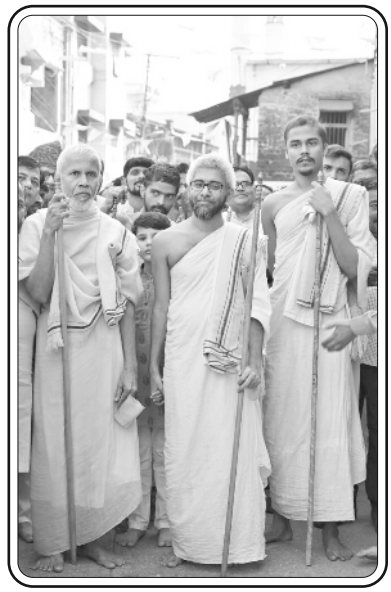

परम पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. के शिष्यरत्न प.पू. विपुल साहित्य सर्जक उपाध्याय प्रवर मनितप्रभसागरजी म.सा. मुनि श्री समयप्रभसागरजी म., मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म., मुनि श्री महितप्रभसागरजी म., मुनि श्री मौलिकप्रभसागरजी म., मुनि श्री मृगांकप्रभसागरजी म. की पावन निश्रा में एवं पू. गणिनी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी की सुशिष्या प.पू. विरलप्रभाश्रीजी म., श्री विपुलप्रभाजी म., कृतार्थप्रभाश्रीजी म. की सानिध्यता में जैन श्री संघ नंदुरबार के तत्त्वावधान में पंचमंगल महाश्रुतस्कंध उपधान तप की मंगलमय आराधना सानंद सम्पन्न हुई।

उपधान तप का प्रारंभ

चातुर्मास की शुरुआत के साथ ही पूज्य उपाध्याय प्रवर ने नंदुरबार नगर में उपधान की आराधना करवाने का सपना संजोया। संघ के आगेवानों से इस विषय में चर्चा हुई और सुश्रावक पुखराजजी श्रीश्रीमाल (काकाजी) आदि ने पूज्यश्री के इस अद्वितीय विचार को स्वर देते हुए कहा-साहेबजी! उपधान तप जरूर होगा, हम सब आपके साथ है। तैयारियाँ प्रारंभ हुई... फॉर्म तैयार किये गये, बैनर लगाये गये और देखते ही देखते आराधकों का जुलूस उपधान हेतु उमड़ पड़ा। उपाध्याय प्रवर का एक ही कहना था-हम कोई भी नया आशियाना, आरंभ-समारंभ नहीं करेंगे, संघ के पास जितनी सुविधा है उसी में हमें आराधकों की व्यवस्थाएँ देखनी है। QUANTITY नहीं होगी तो चलेगा परन्तु QUALITY MAINTAIN होनी चाहिए-इसी सिद्धांत के साथ पूज्यश्री आगे बढ़ते गये। आराधकों का मंगलमय प्रवेश करवाया गया।

इस उपधान तप का प्रारंभ अकबर प्रतिबोधक जिनचंद्रसूरि पुण्यतिथि आसोज वदि दूज 12.9.2022 को हुआ। इस दीर्घ तपस्या में आराधकों की कुल संख्या 105 थी, जिनमें पहले उपधान के 76 आराधक थे।

उपधान आराधकों की विशिष्टता

आराधकों की कुछ ऐसी विशिष्टताएँ जो न केवल अनुमोदनीय है बल्कि जीवन मे अपनाने जैसी है। सभी आराधक अपना पानी खुद लाते थे और खुद ही चुकाते थे। नीवि के दिन हॉल का काजा निकालने का कार्य हो या भोजन करने हेतु चौकी, पानी की मटकी आदि की पडिलेहन का विषय हो, वे सारे काम स्वयं करते। सभी आराधकों में परस्पर सहयोग और प्रेम का अनूठा वातावरण रहा। जयणा धर्म का ज्यादा से ज्यादा पालन कैसे हो?इसी तथ्य को लक्ष्य में रखकर सब अपनी क्रियाएँ साधते थे।

उपधान तप में पूज्य उपाध्याय श्री का कृतित्व

हालाँकि पूज्यश्री किसी परिचय के मोहताज नहीं क्योंकि उनके व्यक्तित्व से हर कोई वाकिफ है। जब भी उनसे पूछा जाता कि साहेबजी! आपका इतना अनूठा ज्ञान, उपधान की अनूठी प्लानिंग, वैराग्य और त्यागमय विचारों का प्रवाह ये सारी चीजें आप कैसे एक साथ मेनेज कर लेते हो?तब मानो वे स्वत: ही मुखर हो उठते... मैं कुछ नहीं कर रहा बल्कि मेरे ऊपर गौतम स्वामी की अदृश्य असीम कृपादृष्टि से ही सारे कार्य सम्पन्न हो रहे हैं। निश्चित ही पूज्यश्री की जितनी अनुमोदना, अभिनंदना की जाये उतनी कम है।

पूज्यश्री के अनुशासन, अलौकिक प्रवचन शैली, वैराग्य शतक की क्लास, बच्चों और बड़ों के प्रति वात्सल्य, आराधकों की सार-संभाल तथा सभी की आराधना में अभिवृद्धि हेतु किये गये अविरल प्रयासों से यह पावन भगीरथी बहती चली गई।

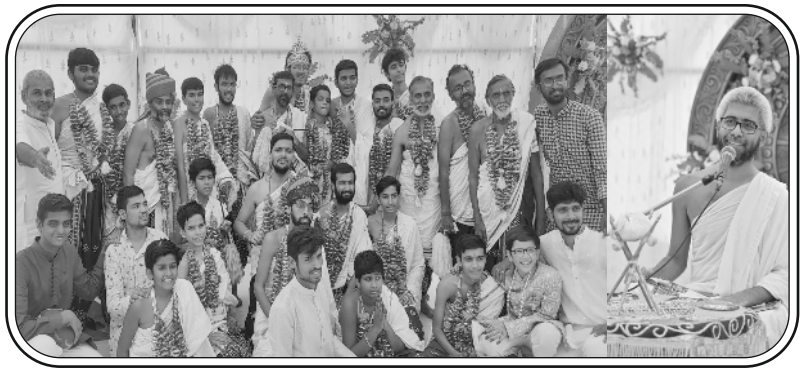

आश्चर्य की बात तो यह है कि जो आराधक मात्र बीसड़ करने हेतु आये थे, उन्होंने भी मोक्षमाला पहनने का निर्णय कर पूरा उपधान पूर्ण किया। वास्तव में, यह पूज्यश्री की संयम-साधना का ही तेज है, जिसमें भव्यजीव ज्ञान का प्रकाश प्राप्त कर रहे हैं।

विविध DAYS और TASK

मेरे द्वारा आराधकों की आराधना में चार चाँद लगाने हेतु विविध DAYS और TASK रखे गयें, जैसे-स्वाध्याय डे, लेटर डे, भक्ति डे, नियम डे, गुणानुराग डे, गाथा डे इत्यादि..... सभी आराधकों ने इसमें बढ़-चढ़के भाग लिया।

सबका साथ....सबका विकास

सभी आराधकों को समयसर देववंदन-प्रतिक्रमण आदि क्रिया करवाना, गाथा सुनना, तत्त्व समझाना, गेम्स खिलवाना आदि विविध गतिविधियों में सभी मुनि एवं साध्वी भगवंतों का अथक प्रयास रहा। उपधान की साधना के दौरान पूज्य समयप्रभसागरजी की तप-जप साधना और पूज्य महितप्रभसागरजी की वर्द्धमान तप की सलंग आठ ओली की साधना भी प्रशंसनीय और अनुमोदनीय है।

किट निर्माण, भोजन व्यवस्था, मेडिकल व्यवस्था, आवास व्यवस्था आदि उपधान संबंधित सारे कार्यों में खरतरगच्छ युवा परिषद (Kयुप) और खरतरगच्छ महिला परिषद (KMP)- नंदुरबार का साथ भूलाया नहीं जा सकता। इनके सहयोग के बिना शायद यह उपधान सफलता के शिखर को नहीं छू पाता। पूरे केयुप और केएमपी ने समर्पण का अनूठा आदर्श उपस्थित किया। उनकी एक ही चाह थी कि उपधान का जयघोष पूरे भारत में होना चाहिये। नंदुरबार के अन्य मण्डलों का भी समय-समय पर सहयोग मिला।

दशवैकालिक के योगोद्वहन सम्पन्न

पूज्य उपाध्याय श्री द्वारा उपधान की क्रियाओं को करवाते हुए साध्वी कृतार्थप्रभाश्रीजी के दशवैकालिक-योगोद्वहन भी करवाये गये। साध्वीजी की यह उग्र तपस्या भी सानंद सम्पन्न हुई।

मोक्षमाला का उत्साह

समय अपने पंख लगाकर उड़ान भरने लगा और देखते ही देखते मोक्षमाला के दिन निकट आने लगे। इससे एक दिन पूर्व ही भव्यातिभव्य ऐतिहासिक वरघोडें का आयोजन किया गया। विशाल जनमेदिनी को देख लोग मानो दाँतो तले अंगुली दबा रहे थे। आराधकों का उत्साह मानो उनके हृदय में समा नहीं पा रहा था। गाजे-बाजे, ढोल-नगाड़ें, हाथी-घोड़ें, परमात्मा का रथ, आराधकों की बग्घियाँ और चतुर्विध संघ की भारी भीड़ से युक्त वरघोड़ा अति रमणीय प्रतीत हो रहा था।

मोक्षमाला पहनने हेतु बस अब चंद घड़ियाँ ही शेष थी। आखिर वो शुभ वेला आ ही गई। लोगों ने जब आराधकों को निहारा तो उन्हें अतिशयोक्ति हुए बिना न रही क्योंकि सभी उपधान-तपस्वियों की वेशभूषा एक सरीखी थी... उन्हें देख ऐसा लग रहा था मानो यह मालारोपण का उत्सव नहीं बल्कि दीक्षा का महामहोत्सव है। एक दिन पूर्व ही रात्रि में

मोक्षमाला के रिकॉर्ड चढ़ावे हुए। 76 आराधकों की मोक्षमाला... जिनमें पहली माला जयशीला बेन गौतमजी तातेड़ ने, दूसरी माला तरूण अशोकजी तातेड़ ने और तीसरी माला मंजूदेवी महेन्द्रजी तातेड़ द्वारा धारण की गई। मोक्षमाला पहनने वाले सभी आराधकों का उल्लास गजब का था। अंतिम 76वीं माला तक भी गौतम गणधर माल्योत्सव वाटिका का माहौल वैसा ही, लोगों की भीड़ वैसी ही जैसी प्रथम माला में थी। इसी कड़ी में दो दिन के इस महोत्सव में उपधान संबंधित दो नाटिकाओं का सुन्दर मंचन भी किया गया।

ब्रह्मचर्य व्रत धारण

नाण सजी हुई थी, चौमुखजी परमात्मा विराजमान थे, उपधान की क्रियाविधि चल ही रही थी और इसी उत्तम प्रसंग पर सोने में सुहागा तुल्य तीन जोड़ो ने, कंचनदेवी रमेशजी पारख, शांतिदेवी घेवरचन्दजी घीया और निर्मलाबेन अनिलजी कोठारी ने व्रतों में शिरमौर चतुर्थ ब्रह्मचर्य व्रत को आजीवन अंगीकार किया। इनके महान् सत्व की भी भूरि-भूरि अनुमोदना।

अलंकरण उत्सव

मालोत्सव के दिन जैन समाज और श्री संघ के अग्रणी कुछ विशिष्ट श्रावक रत्नों को विशिष्ट अलंकारों से चतुर्विध संघ की साक्षी में नवाजा गया। श्रावकों की इस शृंखला में सबसे पहले नंदुरबार निवासी पुखराजजी मोडमलजी श्रीश्रीमाल को संघरत्न अलंकरण से नवाजा गया। पुखराजजी श्रीश्रीमाल की प्रसिद्धि काकाजी के नाम से है। श्री संघ के हर कार्य में तन-मन और धन से सेवा देने वाले काकाजी के बारे में जितना कहा जाये, उतना कम है।

चंदनमलजी मोडमलजी श्रीश्रीमाल को वैयावच्च रत्न से अलंकृत किया गया। चंदनमलजी एक ऐसे व्यक्तित्व के धनी है जो सदा सेवा में तत्पर रहते है। साधु-साध्वी भगवंतों के लिए तो मानो एक सच्चे शासन पिता की तरह खड़े रहते है। जिनशासन निश्चित ही ऐसे श्रावकरत्नों से गौरवान्वित है।

इसी कड़ी में सूरत निवासी श्रावकवर्य घेवरचन्दजी मेवारामजी घीया को तपस्वी रत्न से नवाजा गया। तपस्या में घेवरजी का शानी कोई दूसरा नहीं। पूज्य उपाध्याय प्रवर के प्रति समर्पण इतना गजब का कि सूरत चातुर्मास में पूज्यश्री के जन्म के 42वें वर्ष प्रवेश निमित्ते 42 उपवास की तपस्या, उपाध्याय पदारोहण निमित्ते वर्षीतप का प्रारंभ, चलते वर्षीतप में उपधान तप से जुड़ना और इस उपधान तप में भी पूज्यश्री की दीक्षा के 22 वें वर्ष में प्रवेश निमित्ते 22 उपवास की अति दीर्घ तपस्या करके घेवरजी ने गुरु की तप के द्वारा अभिनंदना की। आगे की कड़ी में नंदुरबार के ही श्रावकवर्य कमलेश भाई शेषमलजी कांगटाणी को शासनरत्न अलंकार देकर बधाया गया। शासन के हरेक कार्य में चाहे वो पर्युषण में बोलियों का विषय हो, चाहे चातुर्मास में मंच संचालन का, चाहे जीवदया आदि की टीप लिखवानी हो, चाहे धर्म से जुड़ा कोई भी विषय हो.... हर एक गतिविधि में जिनके दिल में शासन बसा है ऐसे कमलेश भाई जैसे श्रावक हम सबके लिए प्रेरणा के स्रोत है। इस तरह योग्य व्यक्ति को योग्य अलंकार देकर उनके सम्मान का यह अवसर विशाल जनमेदिनी के बीच अत्यंत हर्ष का विषय था।

पुस्तक विमोचन

मालोत्सव के इस महामहोत्सव के चलते तीन पुस्तकों का विमोचन भी किया गया। जिनमें पूज्यश्री द्वारा लिखित

''जब प्राण तन से निकले'' पुस्तक जिसमें अंत समय में मृत्यु को कैसे महोत्सव बनाया जायें, इस संदर्भ में विवेचन है, इसका विमोचन रायकुंवरदेवी पुखराजजी चौपड़ा परिवार द्वारा किया गया। पूज्यश्री द्वारा संयोजित'' दो प्रतिक्रमण सूत्र'' तथा पूज्यश्री द्वारा संपादित ''अहा! जिन्दगी'' पुस्तक का विमोचन ओमप्रकाशजी कोठारी परिवार-इंदौर द्वारा किया गया।

सफल सुन्दर चातुर्मास

पूज्यश्री का स्वाध्याय सुवास-चातुर्मास नंदुरबार हर व्यक्ति के दिल में अमिट छाप छोडता हुआ पूरा हुआ। चारों माह प्रवचन की अमृत धारा ने हृदय को भिगोया। प्रभावित संघ ने निर्णय लिया कि कोई भी प्री-वेडिंग, पूल पार्टी का आयोजन नहीं करेगा। तप-जप व स्वाध्याय की चारों माह झडी लगी रही। पार्श्वनाथ, पावापुरी, गौतमस्वामी की भावयात्राएँ अनूठी रही। मुमुक्षु श्रद्धा लूंकड का वरघोडा व अभिनंदन समारोह, नये वर्ष का गौतमरास, सब अद्‌भुत व अनूठे रहे। दस Open Book Exam हुए।

पाली में 80वीं ओली एवं भूमि पूजन और खाद मुहूर्त संपन्न

पाली 21 नवंबर। श्री जिनकुशलसूरि जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ के तत्वावधान में दि. 19-11-22 से 21-11-2022 त्रिदिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रथम दिवस पू. साध्वी प्रियरंजनाश्रीजी म., पू. साध्वी प्रियदिव्यांजनाश्रीजी म., पू. साध्वी प्रियशुभांजनाश्रीजी म. की निश्रा में कृतज्ञता दिवस (विदाई समारोह) एवं भूमिपूजन व खाद मुहूर्त के चढ़ावे बोले गए।

नवग्रह पूजन का लाभ वीरचंद केशरीमल छाजेड़, दशदिग्पाल पूजन का लाभ मांगीलाल गौतम संखलेचा, अष्टमंगल पूजन का लाभ संपतराज भरत संखलेचा, शिलान्यास का लाभ जगदीशचंद पवन भंसाली, खाद मुहूर्त का लाभ जगदीशचंद रतनकुमार बोथरा, भूमिपूजन का लाभ सोहनलाल अनिल कुमार सेठिया, साधर्मिक भक्ति का लाभ जगदीशचंद जितेंद्र अंकुर बोथरा ने लिया। विदाई कार्यक्रम में अध्यक्ष जगदीश भंसाली ने भाव व्यक्त किये। जैनम व यश लूणिया बच्चों द्वारा नृत्य किया, केमपी महिला और निशा द्वारा विदाई गीत गाया गया।

द्वितीय दिवस सुबह 6.30 बजे साध्वी प्रियरंजनाश्रीजी म. की निश्रा में नवग्रह, अष्टमंगल, दशदिग्पाल आदि पूजन के पश्चात् लाभर्थियों द्वारा भूमिपूजन एवं खाद मुहूर्त किया गया। 9 बजे साध्वी जी द्वारा किताब का विमोचन किया गया। सभी लाभार्थियों का बहुमान ट्रस्ट के द्वारा किया गया मंच का संचालन पवन धारीवाल ने किया। विजय मुहूर्त में शिलान्यास का मुहूर्त किया गया। दोपहर 3 बजे तप के निमित्त बड़ी साँझी का आयोजन किया गया।

तृतीय दिवस सुबह 7.30 बजे साध्वी प्रियरंजनाश्रीजी म. की 80वीं वर्धमान तप की ओली का पारणा महावीर नगर में अशोक अंकित बोथरा के निवास स्थान पर हुआ। दोपहर 3 बजे पाली से विदाई ली इस विदाई में जय परिसर से रूप रजत विहार तक सभी साथ में चले, नम आँखों से विदाई दे रहे थे आगे जयपुर की तरफ विहार किया।

सादर श्रद्धांजलि

श्रीमती रुक्खमणी देवी नाहटा

सरलमना, धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती रुक्खमणी देवी नाहटा धर्मपत्नी श्री हरखचंदजी नाहटा का 84 वर्ष की आयु में दि. 19 नवंबर, 2022 को दिल्ली में समतापूर्वक देहावसान हो गया। कुछ समय से आप अस्वस्थ चल रही थीं। धार्मिक क्रियाओं में आप नियमित रुचि रखती थीं। उन्होंने अनेक तपस्याएं की। श्री हरखचन्दजी ने जहाज मंदिर मांडवला में उपधान तप का आयोजन करवाया, जिसमें श्रीमती रुकमणी देवी ने स्वयं भी उपधान तप की साधना की।

आप द्वारा नई दिल्ली के मेहरोली क्षेत्र के भाटी गाँव में महाबलीपुरम तीर्थ की स्थापना की, जिसमें प्रभु पारसनाथ के अलावा उपसर्गहारिणी माता पद्मावती का भव्य जिनालय स्थापित किया। आप द्वारा दो विलुप्त कल्याणक तीर्थों का पुनरुद्धार एवं पुर्नस्थापना की, जिसमें परमात्मा शीतलनाथ प्रभु के ४ कल्याणकों की भूमि श्री भद्दिलपुर एवं परमात्मा श्री नमिनाथ एवं परमात्मा श्री मल्लीनाथ जी के ४-४ कल्याणकों की भूमि श्री मिथिला जी तीर्थ, इन दोनों तीर्थों के लिए भूमि अपनी ओर से प्रदान की एवं स्वद्रव्य से इन तीर्थों का निर्माण करवाया।

जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित है।

परम पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति

आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के आशीर्वाद से घोषित

अखिल भारतीय जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ प्रतिनिधि महासभा कार्यकारिणी 2022-2025

पदाधिकारी

श्री मोहनचंद ढढा, चैन्नई- संरक्षक,
श्री प्रकाशचंद सुराना, रायपुर- अध्यक्ष
श्री प्रकाशचंद कानूगो, मुंबई- वरिष्ठ उपाध्यक्ष
श्री पदम कुमार टाटिया, चैन्नई- महामंत्री
श्री पदम बरडिया, दुर्ग- सह मंत्री
श्री बाबूलाल तातेड़, अहमदाबाद- कोषाध्यक्ष
संघवी श्री हंसराज डोसी, बेंगलुरु- सह कोषाध्यक्ष
श्री भूपत चोपड़ा, पचपदरा- संघटन मंत्री
श्री अरूण ललवानी, इचलकरणजी- सांस्कृतिक मंत्री

क्षेत्रिय प्रतिनिधि

श्री रतनलाल हालावाला, अहमदाबाद- क्षेत्रीय उपाध्यक्ष (गुज.)
श्री लूणकरण बोथरा, बाड़मेर- क्षेत्रीय उपाध्यक्ष (राज.)
श्री कांतिलाल बोथरा, दुर्ग- क्षेत्रीय उपाध्यक्ष (छ.ग.)
श्री कुशलचंद गुलेछा, बेंगलुरु- क्षेत्रीय उपाध्यक्ष (कर्नाटक)
श्री संपतराज बोथरा, दिल्ली- क्षेत्रीय उपाध्यक्ष (दिल्ली)
श्री शंकरलाल घिया, मुंबई- क्षेत्रीय उपाध्यक्ष (महाराष्ट्र)
श्री हस्तीमल हुंडिया, हैदराबाद-क्षेत्रीय उपाध्यक्ष (तेलंगाना, आंध्रा.)
श्री रंजीत गोलेछा, चैन्नई- क्षेत्रीय उपाध्यक्ष (त.ना.)
श्री दिनेश हुंडिया, इंदौर- क्षेत्रीय उपाध्यक्ष (एम.पी)

कार्यकारिणी (संघ सदस्य)

श्री प्रकाशचंद लोढ़ा, श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, जयपुर
श्री राज लोढ़ा, श्री जैन श्वे. वासुपूज्य महाराज मंदिर, उदयपुर
श्री हुकमसिंह बाफना, श्री जैन श्वे. मूर्ति. ट्रस्ट, झालरापाटण
श्री घीसूलाल गुलेच्छा, श्री जैन खरतरगच्छ संघ, फलोदी
श्री हीरालाल धारीवाल, श्री जैन श्वे. मूर्ति. श्रीसंघ, चोहटन
श्री कैलाशचंद मेहता, श्री जिनकुशलसूरि जैन दादाबाड़ी मालेगांव
श्री महिपाल नाहर, श्री जैन श्वे. मूर्ति. खरतरगच्छ संघ, खेतिया
श्री प्रवीण पारख, श्री जैन श्वेताम्बर संघ, तलोदा
श्री प्रेमचंद गुलेछा, श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, अक्कलकुआ
श्री पारसमल नाहटा, श्री कुंथुनाथ भगवान जैन श्वे. मंदिर, शहादा
श्री डूंगरचंद बाफना,
श्री जिनदत्तसूरि जैन श्वे. दादाबाड़ी ट्रस्ट, दोंडाईचा
श्री जेठमल भंसाली, श्री शांतिनाथ मूर्ति. जैन श्री संघ, डेडियापाड़ा
श्री प्रशांत जैन, श्री श्वे. मूर्तिपूजक श्रीसंघ, सेलंबा
श्री किशोर चोरड़िया, श्री नमिनाथ जिनालय जैन संघ, खापर

व्यक्तिगत सदस्यः

श्री भूरचंद जीरावला, जोधपुर, श्री गजेन्द्र भंसाली, उदयपुर, श्री मांगीलाल मालू, सूरत, श्री जगदीश भंसाली, पाली, श्री रतनलाल संकलेचा, बाड़मेर, श्री तिलोकचंद पारख, रायपुर, श्री शांतिलाल मरडिया, मुंबई, श्री रतनचंद बोथरा, तिरुपुर, श्री सुनील लोढा, टोंक, श्री विजय गोलछा, धमतरी, श्री मोहन रत्नेश, जोधपुर, श्री पदम चौधरी, जयपुर, श्री प्रदीप श्रीश्रीश्रीमाल, मुंबई, श्री धनपत कानुगो, मुंबई, श्री गिरीश छाजेड़, कोटा, श्री गौतम मालू, सूरत, श्री मनीष नाहटा, दिल्ली, श्री ललित संकलेचा, हैदराबाद, श्री सुनील गोपावत, नीमच, श्री मदनलाल चोपड़ा, राजनांदगांव, श्रीमती आरती जैन, बेंगलूर।

पदेन सदस्यः

श्री तेजराज गोलेछा, बेंगलूर- पेढ़ी अध्यक्ष
श्री सुरेश लूनिया, चैन्नई- केयूप अध्यक्ष
श्रीमती सरोज गोलेछा, राजनांदगांव- केएमपी अध्यक्ष

केकड़ी में प्रतिष्ठा एवं दीक्षा संपन्न

श्री शांतिलालजी गुलेच्छा बने मुनि श्रमणरत्नसागरजी म.

केकडी 28 नवंबर। पूज्य आचार्य श्री जिनपीयूषसागरसूरीश्वरजी म. की निश्रा में केकड़ी में दादावाडी परिसर में साध्वी शुभदर्शनाश्रीजी म. की प्रेरणा से नवनिर्मित श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनालय की प्रतिष्ठा /अष्टान्हिका महोत्सव समारोह पूर्वक संपन्न हुआ। चेन्नई निवासी श्री शांतिलालजी गुलेच्छा की दीक्षा हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुई। नूतन मुनि का नाम मुनि श्रमणरत्नसागर जी म. घोषित हुआ।

आगामी कार्यक्रम- मुमुक्षु श्रीमती अलका जी भंसाली पूना की दीक्षा अष्टापद तीर्थ (म.प्र.) में 3 फरवरी 2023 को आचार्य श्री की निश्रा व पू. साध्वी जिनशिशुप्रज्ञाश्रीजी म. की सानिध्यता में संपन्न होगी। मुमुक्षु नेहा गुलेच्छा अकलकुआ की दीक्षा 29 मई 2023 आचार्यश्री की निश्रा में अकलकुआ में होगी।

जबलपुर में दादाबाड़ी की प्रतिष्ठा 18 जनवरी 2023 को होगी। मलकापुर महाराष्ट्र में नवनिर्मित सिद्धचक्र मंदिर की अंजनशलाका / प्रतिष्ठा 3 मई 2023 को होगी। अमलनेर में जीर्णोद्धार उपरांत जिनालय की प्रतिष्ठा 17 मई 2023 होगी।

प्रेषक-कपिल मालू

बेंगलूरु में कृतज्ञता ज्ञापन समारोह

बेंगलूरु 7 नवंबर। श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाड़ी ट्रस्ट बसवनगुडी के तत्वावधान में पूज्या साध्वीवर्या मंजुलाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा के चातुर्मास संपूर्ण होने एवं कार्तिक पूर्णिमा के शुभ दिवस पर हैदराबाद होते हुए रायपुर छत्तीसगढ़ की ओर पाद विहार करने की वेला में साध्वीवर्याओं द्वारा चातुर्मास के दौरान सकल संघ को ज्ञान ध्यान, तप आराधना करवाई और सभी के आत्मोत्कर्ष की मंगल भावना से प्रबोध दिया इस उपलक्ष्य में सकल संघ द्वारा गुरुवर्याश्रीजी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई। इस कड़ी में ट्रस्ट के अध्यक्ष निर्भयलालजी गुलेच्छा, तेजराजजी गुलेच्छा, चुन्नीलालजी गुलेच्छा, अरविन्दजी कोठारी, राजेन्द्रजी गुलेच्छा, ललित डाकलिया, भरत गटागट, नितेश बोहरा, यशोदा गुलेच्छा और ललिता पालरेचा आदि सदस्यों ने नम आंखों और रुंधे स्वरों से कृतज्ञता जताई और पुनः एक बार और दक्षिण की धरा पर फूलों की नगरी बेंगलोर में चातुर्मास करने और सानिध्यता प्रदान करने की विनती की।

ट्रस्ट के महामंत्री कुशलराज गुलेच्छा ने पधारे हुए सभी आगंतुकों को धन्यवाद दिया और कहा कि चातुर्मास काल के दौरान आराधना भवन में गुरुवर्याश्रीजी द्वारा स्वाध्याय, प्रवचन, प्रतिक्रमण और अनेक धर्म ध्यान से ओतप्रोत आराधना करवाई। कार्यक्रम का संचालन ट्रस्ट के प्रवक्ता और खरतरगच्छ संघ के मंत्री अरविन्द कोठारी ने किया। संघ के ललित डाकलिया ने बताया कि गुरुवर्याश्रीजी का विहार कार्तिक पूर्णिमा के दिन धर्मीदेवी छगनलालजी भंसाली परिवार के निवास पर चामराजपेट की ओर हुआ। भंसाली निवास पर शत्रुंजय महातीर्थ की भावयात्रा का आयोजन किया गया।

डुठारिया में श्री जिनमनोज्ञसूरिजी के संयम जीवन के 50वें वर्ष में प्रवेश समारोह

डुठारिया 10 नवंबर। छाजेड़ नगरी डुठारिया में ऐतिहासिक चातुर्मास की पूर्णता के बाद पूज्य गुरुदेव श्री जिनकांति सागरसूरीश्वरजी महाराज के शिष्य आचार्य श्री जिनमनोज्ञ सूरिजी महाराज के संयम जीवन के पचासवें वर्ष में प्रवेश का महोत्सव धूमधाम से चतुर्विध संघ की साक्षी में अनेक भक्तों की हाजरी के साथ मनाया गया।

संघ के मोहनलाल छाजेड़ ने कहा कि हमारी छाजेड़ नगरी धन्य हो गई। हमारे संघ को छाजेड़ गोत्र के आचार्यश्री का लगभग 62 वर्ष बाद चातुर्मास मिला जो हमारे दृष्टिकोण से बहुत ही अच्छा रहा। अच्छी तपस्या हुई, पहली बार नगर के 16 छाजेड़ युवाओं ने लोच कराया।

दीक्षा के 50वें वर्ष में प्रवेश का भव्य वरघोड़ा नगर के मुख्य मार्गों से होता हुआ, दादावाड़ी में पहुंचकर धर्म सभा में परिवर्तित हुआ।

भव्य वरघोड़ा में अश्व पर धर्म ध्वजा लिए पुरुष, भगवान का रथ, आचार्यश्री को पालकी पर बिठाए जयकारों के साथ मधुर बैंड की गीतों के साथ गुरु भक्त विशाल जन मेदनी के साथ चलते हुवे गुरु की महिमा का नृत्य कर चल रहे थे।

साध्वी समुदाय के साथ महिलाए रंग बिरंगी वेशभूषा में चल रही थी, रास्ते में जगह जगह जलपान की व्यवस्था श्री आदेश्वर जैन संघ द्वारा की गई।

धर्मसभा में कई गुरुभक्तों ने गुरुदेव के प्रति श्रद्धा की भावनाएं प्रकट की। धर्मसभा को आशीर्वाद के रूप में बोलते हुवे गुरुदेव ने कहा कि मैं आज जो कुछ हूं मेरे गुरुदेव के आशीर्वाद से ही हूं। अपने गुरु की महिमा को जीवन में कभी भी भूलना नहीं चाहिए। गुरु बिना जीवन भी शुरू नहीं होता है अतः गुरु होना जरूरी है।

संपूर्ण कार्यक्रम का सफल संचालन मुनि श्री नयज्ञसागरजी म. सा. ने बड़े ही आत्मीयता भरे शब्दों के साथ किया। गुरुदेव के परिचय एवं उनके जीवन के प्रसंगों को भाववाही शब्दों में पिरोकर सभा में को बांधे रखा।

पू. साध्वी हेमरत्नाश्रीजी म. ने कहा की डुठारिया में गुरुदेव को संयम जीवन के अर्धशताब्दी में प्रवेश की हार्दिक बधाई के साथ उनके दीर्घायु की कामना करती हूं।

पाली से तुरंत विहार कर डुठारिया पहुंचे पू. साध्वी प्रियरंजनाश्रीजी म. ने धर्मसभा को संबोधित करते हुवे कहा कि

दादा जिनकुशलसूरि का जन्म जयंती समारोह

जयपुर 13 नवंबर। किसी भी संत के समाज व मानव जीवन पर किए गए उपकार चमत्कार से अधिक महत्वपूर्ण है। जो चीज विज्ञान की समझ से परे है, वह चमत्कार की श्रेणी में है। जैन समुदाय में केवल चार आचार्यों को ही दादा गुरुदेव की उपमा मिली है। ये चारों दादा गुरुदेव न केवल चमत्कारी थे, बल्कि इन्होंने लाखों की संख्या में अजैन परिवारों को जैन धर्म से जोड़ा और उन्हें जैन बनाया। इसके उलट आज की परिस्थिति काफी अलग है। आज जैन को ही जैन बनाए रखने में संतों को पसीने छूट रहे हैं, जबकि बड़ी संख्या में अन्य धर्मावलम्बी जैन धर्म की रीति-नीतियों से जुड़ रहे हैं। यह कहना है विश्व प्रसिद्ध जहाज मंदिर के अधिष्ठाता और गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. का।

उन्होंने यह बात जयपुर के पास जामड़ोली स्थित देराउर दादाबाड़ी प्रागंण में तीसरे दादा गुरु श्री जिनकुशलसूरिजी के 743वें जन्म जयंती समारोह में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही।

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. ने कहा कि चारों दादा गुरुदेव की जन्मभूमि राजस्थान अथवा गुजरात रही हो, लेकिन इन्होंने पूरे भारत में हजारों किलोमीटर की पदयात्राएं की। जैनधर्म के बारे में आम जनता को जागरुक किया और जिनकी जैन धर्म को अपनाने में रुचि थी, उन्हें जैन भी बनाया। दादा गुरुदेव की दीक्षा और साधना आत्म साधना के लिए थी, ना कि चमत्कार के लिए। यहीं कारण है कि आज 743 साल बीतने के बावजूद जैन समुदाय दादा गुरुदेव को देश भर में याद कर रहा है। उन्होंने आह्वान किया कि दादा गुरुदेव को उनके चमत्कारों के लिए नहीं उपकारों के लिए याद किया जाएं।

जयपुर में स्थित देराउर दादाबाड़ी की स्थापना की प्रेरणा जिन साध्वीजी ने की, इस दादाबाड़ी के निर्माण के लिए जिन लोगों ने भी सहयोग किया और इसे वर्तमान स्वरूप दिया, सभी के प्रयास अनुकरणीय है।

सुबह 8 बजे सामूहिक चैत्यवंदन और गुरु इकतीसा के पाठ से हुई। इसके बाद दादा गुरुदेव की बड़ी पूजा हुई। इस मौके पर प्रसिद्ध भजन गायक अन्नू फोफलिया, अनिल कोठारी और पुण्य चौरड़िया ने प्रस्तुत की।

हमारा पाली से डुठारिया जाने का और समय पहुंचने का कोई क्रायक्रम था ही नहीं लेकिन गुरुदेव की महती कृपा से हम गुरुदेव को बिना कोई सूचना दिए उन्हें सरप्राइज देना चाहते थे, गुरुदेव बड़े ही दयालु प्रवृत्ति के है और गुरुदेव सभी के साथ समभाव रखते है।

गुरुदेव के संयम जीवन के 50वें वर्ष में प्रवेश के उपलक्ष में गुरुदेव को 27 मणकों की माला वहोराने का लाभ बाबूलालजी भरतकुमारजी रांका सेठिया धोरीमन्ना, कांबली का लाभ केवलचन्दजी, चांदमलजी, पन्नालालजी छाजेड़ दुठारिया एवं गुरुपूजन का लाभ आलोकचंदजी लोढ़ा परिवार सेतरावा वालों ने लिया। संघ की तरफ से सभी लाभार्थी परिवार का बहुमान किया गया।

इस अवसर पर मोहन रत्नेश, कैलाश छाजेड़ भादरेस, श्रीपाल जी कोठरी फलोदी, सुश्री किरण छाजेड़ भादरेश, जगदीशजी संखलेचा पाली, सुश्री शिल्पा झाबक फलोदी, नृत्य यशस्वी सेठिया, खुशबू कोचर, शौर्य सेठिया, चंपालाल छाजेड़ पत्रकार सूरत, गौतम पारख सूरत, नरपत मरडिया सूरत, जीतू मेहता सिणधरी, मोतीलाल मालू जोधपुर सहित अन्य भी कई गुरुभक्त वक्ताओं ने गुरुदेव की महिमा गीतों एवं शब्दों के माध्यम से प्रकट की।

50वें दीक्षा वर्ष में प्रवेश के अवसर पर राजस्थान, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, गुजरात, मध्यप्रदेश, चेन्नई, पुणे, मुंबई, मदुराइ, बैंगलोर से गुरुभक्तों ने लाभ लिया।

पाली से 2 बस मणिधारी भक्त मंडल एवं जोधपुर से 2 बस बाड़मेर जैन श्री संघ की तरफ से, 2 बस भादरेस संघ से आई। अंत में प्रकाशचंद छाजेड ने सभी गुरुभक्तों का पधारने हेतु आभार ज्ञापित किया। प्रेषक-चंपालाल छाजेड़, सूरत

मुमुक्षु श्रद्धा रमेशकुमारजी लुंकड़ का अभिनन्दन

बसवनगुडी बेंगलूरु में दीक्षार्थी अभिनन्दन समारोह श्री जिनकुशल सूरि जैन दादावाड़ी ट्रस्ट बसवनगुडी बैंगलोर के तत्वावधान में खरतरगच्छ युवा परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री रमेशकुमारजी लुंकड़ की सुपुत्री मुमुक्षु कुमारी श्रद्धा लुंकड़ का अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया। ट्रस्ट मंडल के अध्यक्ष निर्भयलाल गुलेच्छा ने दीक्षार्थी परिवार एवं पधारे हुए समस्त आगंतुकों का स्वागत किया। महामंत्री कुशलराज गुलेच्छा ने अनेक संस्मरण को याद करते हुए श्रद्धा लुंकड की गुरु के प्रति समर्पण की बात बताई। खरतरगच्छ के महामंत्री और ट्रस्ट के प्रवक्ता अरविन्द कोठारी ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए बताया कि मुमुक्षु बहिन की दीक्षा जयपुर में खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. के करकमलों से 11 दिसम्बर को होगी। खरतरगच्छ युवा परिषद् के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष ललित डाकलिया ने कहा कि यह परिवार संस्कारों से ओत प्रोत है।

मुमुक्षु श्रद्धा ने अपने उद्बोधन में इस नश्वर संसार के बारे में बताया जिसे सुनकर उपस्थित सभी सदस्य भाव विव्हल हो उठे। कार्यक्रम की शुरुआत शानदार वरघोडे के साथ हुई जिसमें खरतरगच्छ महिला परिषद के बैंड मंडल ने शानदार प्रस्तुति दी और श्री जिनदत्त कुशलसूरि जैन संगीत मंडल के राजेन्द्र गुलेच्छा ने सुंदर स्वागत गीतिका प्रस्तुत की। ट्रस्ट मंडल, खरतरगच्छ युवा परिषद्, महिला परिषद् के सदस्यों ने मुमुक्षु का शाल, माला, तिलक और मोमेंटो से स्वागत किया। इस अवसर पर वीर माता पिता रमेशकुमारजी मधु देवी लुंकड़ ने सभी को दीक्षा महोत्सव में पधारने का निमंत्रण दिया। मोकलसर संघ द्वारा भी इस अवसर पर मुमुक्षु बहिन का अभिनन्दन किया गया।

हुबली १२ नवंबर। इचलकरंजी से पधारी मुमुक्षु श्रद्धा लुंकड़ का दादावाड़ी ट्रस्ट, जिनकुशल युवा मंच, खरतरगच्छ युवा परिषद, जिनकुशल महिला मंडल, खरतरगच्छ महिला परिषद हुबली के तत्वावधान में कुशल बाग दादावाड़ी में अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया।

मुमक्षु को महिला मंडल की सदस्यों द्वारा गाजे बाजे के साथ दादावाड़ी में प्रवेश कराया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए पुखराज कवाड ने मंच पर मुमक्षु के माता पिता रमेशकुमारजी एवं सौ. मधु लुंकड को आमंत्रित किया। सर्वप्रथम मुमक्षु के माता पिता का सुरेखा बाफना, किरण कवाड, प्रकाश मांडोत, मनोज चौपड़ा ने स्वागत किया। मुमक्षु का स्वागत दादावाड़ी अध्यक्ष रमेश बाफना, मोहनलाल बाफना, अशोक छाजेड, मोहनलाल कांकरिया ने किया।

मुमक्षु के पिता रमेशकुमार लुंकड ने अपने सम्बोधन में कहा कि श्रद्धा बचपन से ही परिवार के धार्मिक संस्कार होने से जिनशासन के मार्ग की ओर अग्रसर थी। इस अवसर पर मुमक्षु श्रद्धा लुंकड़ ने अपने सम्बोधन में चारित्र की महत्ता को समझाते हुऐ सभी को दीक्षा पर आने का न्योता दिया।

इस अवसर पर गौतम भंसाली, कल्पेश कांकरिया, जीतू गोलेच्छा, रमेश लुंकड़, प्रकाश लुंकड, महावीर कांकया, जयंतीलाल श्रीश्रीमाल, कांता छाजेड, तारा शाह, मधु बाफना, ललिता संकलेचा, आदि सदस्य उपस्तिथ थे।

इचलकरंजी से चार दादावाडी तीर्थ का संघ संपन्न

इचलकरंजी 27 नवंबर। श्री जैन श्वेताम्बर मणिधारी जिनचन्द्रसूरि दादावाड़ी संघ के तत्वावधान में लाभार्थी परिवार संघवी माणकचंद वरदीचंद ललवाणी चैरिटेबल ट्रस्ट, केसरीमलजी शिवलालचंदजी छाजेड़, (कवास वाले), सुल्तानमलजी उत्तमचंदजी रतनपुरा बोहरा (भिंयाड़ वाले) और माणकमलजी हीरालालजी रामजियाणी संकलेचा परिवार बाड़मेर द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित चार दादावाड़ी धाम यात्रा संघ 20/11/22 को दादा गुरुदेव का आशीर्वाद पाकर पूज्या साध्वी सम्यग्दर्शनाश्रीजी म., पूज्या साध्वी सम्यक्प्रभाश्रीजी म. से मांगलिक सुनकर शुभ प्रस्थान किया।

दि. 21/11/22 को पुरे दिन चार दादावाड़ी धाम एक्सप्रेस में आनंद और भक्ति के साथ मगंलमय प्रवास रहा।

दि. 22/11/22 को सुबह महरौली में दादा मणिधारी के दरबार में हाजरी लगी दर्शन वंदन सेवा पूजा की। सुबह 10 बजे से दादा के दरबार में दादा गुरुदेव की रूपनगर महिला मंडल दिल्ली द्वारा बहुत ही उल्लास, हर्ष, भक्ति संगीत के साथ पूजा करायी गयी। बाड़मेर जैन श्री संघ दिल्ली और सिवांची जैन संघ दिल्ली और नाकोड़ा ट्रस्टी गौतमजी सालेचा इन सभी के द्वारा सभी सघंपतियो का बहुमान किया गया।

दि. 23/11/22 को संघ जयपुर गुरुदेव की हाजिरी में पहुंचा। पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत गुरुदेव श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. के दर्शन वंदन किये प्रवचन सुना। गुरुदेव द्वारा मंत्रित दादा गुरुदेव के स्फटिक चरण पादुका संघपतियों को प्रदान की गयी। गुरुदेव की प्रेरणा से ललवानी परिवार ने पाटण में भूमिदाता के रूप में लाभ लिया। जयपुर खरतरगच्छ संघ द्वारा संघपतियों का बहुमान किया गया। मरुधर ज्योति साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म. के दर्शन वंदन किए। शाम मानसरोवर में पू. प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. के दर्शन, प्रवचन सुना। मानसरोवर संघ द्वारा संघपतियों का बहुमान किया गया। मांगलिक सुनकर संघ ने मालपुरा के लिए प्रस्थान किया।

रात्रि में पहुंचकर तीसरे दादा कुशल गुरुदेव के दरबार में हाजरी लगाई। संगीतकार राजीव विजयवर्गीय द्वारा देर रात तक बहुत ही शानदार भाव और उल्लास, भक्ति और संगीत के साथ दादा गुरुदेव की भक्ति करायी गयी। मेहता पुखराजजी, सुमेरमलजी तातेड द्वारा सभी संघपतियों का बहुमान किया गया। सभी यात्रियों की तरफ से रमेशजी भंसाली ने संचालन करते हुए संघपतियों का बहुमान किया।

दि. 24/11/22 को मालपुरा में तीसरे दादा कुशल गुरुदेव के दरबार में दर्शन एवं पूजा राजकुमारी जैन द्वारा उल्लास के साथ करायी और भक्ति में सरोबार कर दिया।

सभी संघपतियों द्वारा सभी यात्रियों को खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.सा. द्वारा अभिमंत्रित दादा गुरुदेव के स्फटिक चरण युगल भेंट स्वरूप बहुमान करके प्रदान किये। संयोग से जिस दिन मालपुरा थे उसी दिन अमावस्या थी कुशल गुरुदेव की पुण्यतिथि अमावस्या का दिन होने से दादा गुरुदेव से सीधा साक्षात्कार हो रहा था ऐसे सभी भक्ति में तल्लीन हो गये।

दि. 25/11/22 को अजमेर में प्रथम दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि की समाधि भूमि पर दर्शन, पूजा का अनुठा लाभ प्राप्त किया। शतावधानी साध्वी श्री मनोहरश्रीजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन, प्रवचन सुना।

अक्कलकुवा-सकल जैन संघ का नया आगाज

पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य उपाध्याय प्रवर श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा और प्रेरणा से सकल जैन श्री संघ- अक्कलकुवा में 'जैनत्व बचाओ जागरण अभियान' का शंखनाद किया गया। इस अभियान का एक ही लक्ष्य था कि वर्तमान में हमारे समाज में जो कुरीतियाँ, विकृतियाँ पैदा हो रही हैं, उससे जैनत्व को कैसे बचाया जाये। समाज में फैल रही ये विसंगतियाँ न केवल जैन संघ से जुड़ी है बल्कि समग्र विश्व से संबद्ध है। इन समस्याओं में प्री-वैडिंग, पुल-पार्टी, बेबी-सॉवर, डिस्पोजेबल का उपयोग, संगीत-संध्या जैसी कई समस्याएँ जुड़ी है, जो हमारी भारतीय संस्कृति को हर तरह से खोखला कर रही है। यदि इस पर प्रतिबंध नहीं लगाया गया तो भारत की इस वैराग्य और त्यागवादी संस्कृति को पाश्चात्य और भोगवादी संस्कृति बनने में देर नहीं लगेगी।

पूज्यश्री ने वर्तमान की इन्हीं विकृतियों को मध्य नजर रखते हुए अपनी ओजस्वी और सटीक वाणी के द्वारा जन-चैतन्य को झिंझोडने वाले प्रवचनों से तथा युवाओं, बालिकाओं, महिलाओं, संघ के आगेवानों एवं सकल श्री संघ (मंदिरमार्गी और स्थानकवासी) से की गई चर्चाओं (मिटिंगो) से अक्कलकुवा संघ में सर्वसम्मति से कुछ नियम पारित किये, जो इस प्रकार है- प्री-वेडिंग, पूल-पार्टी, बेबी-सॉवर, वेज और नॉनवेज हॉटेल में भोजन, नॉनवेज के आकार-वर्ण-नाम के भोजन, संगीत संध्या में कोरियोग्राफर, ट्रान्सपरेन्ट वस्त्रों का उपयोग, समारोह में जमीकंद, असभ्य रूप से एनिवर्सरी मनाना, मदिरापान-हुक्का आदि, किटी पार्टी, बीच मार्ग में महिलाओं का नृत्य, पर्यटन स्थलों पर निकाले गये विचित्र फोटो का सोशल मीडिया पर प्रस्तुतीकरण, आतिशबाजी का सर्वथा निषेध और अपार चीजों के निर्माण में संदर्भ में निर्णय लिया गया कि समारोह में नाश्ते में 21 आइटम तथा भोजन में 31 आइटम निर्माण तक का ही प्रावधान रहेगा। इसके साथ-साथ ये नियम टूटे नहीं, इसलिए ठोस दंड भी निर्धारित किया गया।

इन नियमों में सतत मजबूती बनी रहें इसलिए पूज्यश्री ने 11 सदस्यों की एक कमेटी तैयार की, जिनके नाम इस प्रकार है- प्रकाशचंदजी लालचंदजी गोलेच्छा, प्रेमचंदजी लालचंदजी गोलेच्छा, महावीरजी राणुलालजी भंसाली, सुरेशचंदजी मुकनचंदजी गोलेच्छा, मनोजजी राणुलालजी डागा, रमेशजी राणुलालजी कोचर, आशीष नवरतनजी ललवाणी, राजेन्द्रजी भिकमचंदजी कोटड़िया, कल्पेश खेतमलजी झाबक, पंकज जसराजजी बोहरा, पंकज गौतमचंदजी बोहरा, राकेश गौतमचंदजी बोहरा।

इचलकरंजी से...

यहां से प्रस्थान कर के दोपहर 3 बजे ब्यावर दादावाड़ी मंदिर के दर्शन किए। बहिन म. साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म. के दर्शन, प्रवचन सुना। चारों दादा गुरुदेव के बारे में संक्षिप्त में जानकारी दी। बहिन म. से प्रेरणा पाकर ललवानी परिवार ने पालीतणा में तलेटी के पास नये भुखंड में भूमिदाता का लाभ लिया और वंश परंपरागत ट्रस्टी बने। ब्यावर जैन श्री संघ द्वारा संघपतियों का बहुमान किया गया। रास्ते में विहार में चल रहे पू. साध्वी प्रियरंजनाश्रीजी म. ठाणा 3 के दर्शन वदंन किया मांगलिक सुना। शाम 6.45 बजे बिलाड़ा दादा गुरुदेव श्री जिनचंद्रसूरिजी महाराज के दरबार में हाजिरी लगी दर्शन किए। भक्तिमय वातावरण में गुरुदेव की महाआरती और भक्ति की। बिलाड़ा संघ द्वारा संघपतियों का बहुमान किया गया। रात्रि में जोधपुर में आचार्य श्री जिनमनोज्ञसागरसूरिजी म.सा. दर्शन वंदन किए। चातुर्मास की विनती की और प्रवचन सुना। बाड़मेर जैन समाज संघ जोधपुर द्वारा संघपतियों का बहुमान किया गया रात्रि विश्राम भुवाल वाटिका में किया।

दि. 26/11/22 सुबह जोधपुर से मीरज के लिए चार दादा धाम एक्सप्रेस से प्रस्थान किया और पूरा दिन मंगलमय यात्रा करते हुए 27/11 को सभी यात्री सकुशल अपने घर पहुंचे। पूरी यात्रा के दौरान कोई विघ्न नहीं आया।

इस यात्रा के दौरान विशेष सहयोग देने वाले विजय ललवानी, प्रवीण ललवानी, मदनजी सिंघवी, दिनेश मालू, नितेश छाजेड़, शैलेश ललवानी, पीयूष सेठिया, तेजराज भंसाली, मुकेश संकलेचा आदि सभी कार्यकर्ताओं अनुमोदना की गई।

आचार्य श्री जिनकांतिसागरसूरिजी म. की पुण्यतिथि समारोह

कोलकाता १५ नवंबर। पू. आचार्य देवेश श्री जिनकांतिसागरसूरीश्वरजी म. सा. के 37वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष में पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. की आज्ञानुवर्तिनी गणिनी पद विभूषिता गुरुवर्या श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा., तपोरत्ना पू. सुलक्षणाश्रीजी म. की शिष्या पू. असम प्रभाविका प्रियस्मिताश्रीजी म., पू. डॉ. प्रियलताश्रीजी म., पू. डॉ. प्रियवंदनाश्रीजी म. आदि ठाणा 6 के सानिध्य में कोलकाता माणिकतला दादावाड़ी में पूजा एवं गुणानुवाद का कार्यक्रम सानंद संपन्न हुआ।

जिनशासन के दैदीप्यमान गगनांगन में चमकते दमकते सितारे हैं गुरुवर, परमात्म महावीर की महकती बगियों में अनेक फूल खिले जिन्होंने शासन को दिव्य सौरभ से सराबोर किया। जिसकी संयम साधना की भीगी-भीगी खुशबू आज भी हमें सुवासित कर रही हैं।

बाड़मेर १५ नवम्बर। बाड़मेर-अहमदाबाद रोड़ पर स्थित कुशल वाटिका प्रांगण में आचार्य श्री जिनकांतिसागरसूरीश्वरजी म.सा. की पुण्यतिथि के उपलक्ष में भव्य गुरुपूजा का कार्यक्रम का आयोजन हुआ। कुशल वाटिका ट्रस्ट, अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद केयुप व अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद केएमपी के तत्वावधान में लाभार्थी परिवार गुरुभक्त टीपूदेवी भूरमल बोथरा परिवार द्वारा खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के आशीर्वाद से बहिन म. साध्वी डॉ. विधुत्प्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा से पू. माताजी म. साध्वी रतनमालाश्रीजी म., साध्वी प्रज्ञाजंनाश्रीजी म. व साध्वी नीतिप्रज्ञाश्रीजी म. की निश्रा में प्रात: 9.30 बजे गुरु मन्दिर में गौरव मालू द्वारा मंत्रोच्चार व भक्ति भावना के माध्यम से गुरुपूजा के साथ अष्टप्रकारी पूजा करते हुए आचार्यश्री को श्रद्धा सुमन अर्पित किए गए। केवलचन्द छाजेड़ ने कहा कि खरतरगच्छाचार्य श्री जिनकांतिसागरसूरीश्वरजी म.सा. प्रखर आचार्य हुए, जिनका बाड़मेर के प्रति स्नेह व वात्सल्य बहुत था और इनके चार चातुर्मास बाड़मेर संघ में ऐतिहासिक हुए। आचार्य श्री द्वारा बाड़मेर से पालीतणा पैदल यात्रा संघ स्वर्ण अक्षरों में लिखा गया है। आर्चायश्री के कर कमलों से ढाणी जैन मन्दिर, चन्द्रप्रभु मन्दिर, शांतिनाथ जिनालय, दादावाड़ी जैसे कई मन्दिरों की प्रतिष्ठा हुई है। आचार्यश्री द्वारा खरतरगच्छ संघ के हित में बाड़मेर संघ कभी भूल नही पायेगा और बाड़मेर में अन्तिम ऐतिहासिक चातुर्मास सन् 1986 में हुआ था। प्रेषक-कपिल मालू

(शेष पृष्ठ 10 का)

नाहर गोत्र...

इनके सुपुत्र श्री विजयसिंहजी नाहर बंगाल के उपमुख्यमंत्री रहे। श्री विजयसिंहजी पूज्य गुरुदेव आचार्य प्रवर श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के अनन्य भक्त थे।

कोटिक गच्छ चन्द्रकुल वज्रशाखा के आचार्य मानदेवसूरि ने इस गोत्र की स्थापना की। इनके संतान आचार्य श्री जिनेश्वरसूरि को खरतरबिरुद मिला। तब से नाहर गोत्रीय श्रावक खरतरगच्छ की समाचारी का पालन करने लगे।

श्री खरतरगच्छ के भावहर्षीय शाखा के आद्य आचार्य भावहर्षसूरिजी नाहर गोत्र के कुलदीपक थे। मरुधर के भटनेर में नाहर गोत्रीय कोडा शाह की धर्मपत्नी कोडमदे के आप पुत्र थे। सं० १५६१ में आपका जन्म हुआ था। सं० १५६६ में अर्थात् ५ वर्ष की लघुवय में ही सागरचन्द्रसूरि संतानीय साधुचन्द्र जी के पास दीक्षा लेकर कुलतिलक गणि के शिष्य बने। सं० १६१० माघ शु० १० को जैसलमेर में गच्छनायक श्री जिनमाणिक्यसूरि ने आपको पाठक पद से अलंकृत किया। आपने सरस्वती देवी की प्रसन्नता और शुभाशीष प्राप्त किया था। आपके हेमसार, रंगसार आदि कई विद्वान् और कवि शिष्य थे।

नाहर गोत्रीय पूज्य मुनिराज श्री महेन्द्रसागरजी म. पूज्य मुनिराज श्री मनीषसागरजी म. तथा सिंधनूर निवासी नाहर परिवार के पूजनीया साध्वी प्रियस्वर्णांजनाश्रीजी म., पू. साध्वी प्रियश्रेष्ठांजनाश्रीजी म., पू. साध्वी प्रियसूत्रांजनाश्रीजी म., पू. साध्वी प्रियकृतांजनाश्रीजी म., पू. साध्वी प्रियदिशांजनाश्रीजी म., पू. साध्वी प्रियक्रियांजनाश्रीजी म. वर्तमान में सुंदर चारित्र की आराधना कर रहे है।

बाड़मेर में ज्ञान वाटिका के बच्चों का अभिनन्दन

बाड़मेर 8 नवम्बर। श्री जिनकान्तिसागरसूरि आराधना भवन में प्रात: 10 बजे ज्ञान वाटिका के गुरुजनों व बच्चों का अभिनन्दन समारोह का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। खरतरगच्छ युवा परिषद केयुप व खरतरगच्छ महिला परिषद केएमपी के तत्वावधान में पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञा से बहिन म. साध्वी विद्युत्प्रभाश्रीजी म. व साध्वीवृन्द की निश्रा में केयुप व केएमपी द्वारा संचालित चार ज्ञान वाटिका- जूना किराडू मार्ग, नाहटों की गली, कल्याणपुरा व खागल मौहल्ला में चल रही है। ज्ञान वाटिका में ज्ञान की गंगा बहा रहे गुरुजनों और ज्ञान ले रहे नन्हें बच्चों व भामाशाहों का अभिनन्दन किया गया। गुरुवर्याश्री को सामूहिक गुरुवन्दन, मंगलाचरण के बाद जैन ध्वज गीत व केएमपी द्वारा स्वागत गीत, नन्हें बच्चों द्वारा गीतिका, नृत्य व उद्‌बोधन दिया गया।

कार्यक्रम में भामाशाह कैलाश कोटड़िया ने कहा कि केयुप व केएमपी द्वारा ज्ञान वाटिकाओं का संचालन हो रहा है जो सराहनीय है, गुरुजन अपनी मेहनत से बच्चों में धार्मिक संस्कार पैदा कर रहे है जो समाज के लिए कारगर साबित होगा। केएमपी की अध्यक्षा सरिता जैन ने ज्ञान वाटिकाओं के विषय पर विस्तृत जानकारी देते हुए सभी बच्चों को ज्ञान वाटिकाओं से जोड़ने का निवेदन किया। समारोह में उपस्थित जनसमुह को सम्बोधित करते हुए साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म. ने कहा कि बच्चे भविष्य के कर्णधार है इनके भरोसे जिनशासन है तथा शासन की अनमोल धरोहर है। हमारा कर्तव्य है कि हमारी संतानों में अच्छे संस्कार डालें।

इस अभिनन्दन समारोह में सकल संघ व शहर के गणमान्य लोग उपस्थित रहे। शहर के भामाशाहों द्वारा ज्ञान वाटिकाओं के संचालन के लिए उदारदिल से सहयोग राशि प्रदान की गई। अभिनन्दन समारोह में पारसमल आसुलाल धारीवाल रामजीगोल, गोदावरीदेवी व्यापारीलाल बोहरा हालावाला परिवार, संघवण प्रेमलता विजयराज डोसी परिवार खजवाना हाल बैंगलोंर, गेरीदेवी चिन्तामणदास कोटड़िया परिवार, रमेशकुमार बोहरा कोनरा हाल अंकलेश्वर द्वारा ज्ञान वाटिका के बच्चों का अभिनन्दन कर बेग, चांदी के सिक्के, पानी बोतल व पारितोषिक प्रदान किया गया।

सभी ज्ञान वाटिका के गुरुजनों व ज्ञान वाटिका के भवन मालिकों का ज्ञान वाटिका संस्थान द्वारा तिलक, माला, साफा व शॉल ओढाकर अभिनन्दन किया गया। इस कार्यक्रम में जैन श्री संघ, कुशल वाटिका ट्रस्ट, खरतरगच्छ संघ चातुर्मास कमेटी, केयुप, केएमपी, केबीपी, कुशल दर्शन मित्र मण्डल ब्रह्मसर ग्रुप, बच्चों के अभिभावक सहित शहर की कई संस्थाओं के पदाधिकारी व सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम का मंच संचालन केयुप सचिव केवलचन्द छाजेड़ ने किया।

प्रेषक- कपिल मालू

साधु साध्वी समाचार

0 पूज्य आचार्य प्रवर श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म. सा. पू. मुनि श्री नयज्ञसागरजी म. डुठारिया का ऐतिहासिक चातुर्मास संपन्न कर विहार कर भीम पधारे। वहाँ से बिलाडा, कापरडाजी होते हुए जोधपुर पधारे। वहाँ से विहार कर पूज्यश्री थोभ पधारेंगे, जहाँ उनकी पावन निश्रा में ता. 14 दिसम्बर 2022 को नवनिर्मित जिन मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा संपन्न होगी।

0 पूज्य स्थविर मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. पूज्य गणि श्री मनीषप्रभसागरजी म. आदि ठाणा 4

तिरपातूर के ऐतिहासिक चातुर्मास पश्चात् विहार कर सेलम पधारे हैं। यहां से चेन्नई की ओर विहार रहेगा।

0 पूज्य मुनिराज श्री महेन्द्रसागरजी म. मनीषसागरजी म. आदि ठाणा जोधपुर से विहार कर ब्यावर, अजमेर होते हुए ता. 26 नवम्बर को जयपुर पधार गये हैं। साथ ही दिल्ली व ब्यावर चातुर्मास पूर्ण कर उनके शिष्यगण जयपुर पधार गये हैं।

0 पूज्य उपाध्याय प्रवर श्री मनितप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री मौलिकप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री मृगांकप्रभसागरजी म. ठाणा 3 नंदुरबार में ऐतिहासिक यशस्वी चातुर्मास व महामंगलकारी उपधान तप की आराधना की पूर्णता के पश्चात् विहार कर तलोदा होते हुए अक्कलकुआ पधारे। वहाँ से पूज्यश्री बलसाणा तीर्थ पधारेंगे जहाँ उनकी निश्रा में वांचना शिविर का आयोजन होगा।

0 पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री महितप्रभसागरजी म. ठाणा 3 नंदुरबार से विहार कर अक्कलकुआं, खापर, डेडियापाडा, झघडिया, अणस्तु होते हुए पालीताना पधार रहे हैं।

0 पू. गणिनी प्रवरा श्री सुलोचनाश्रीजी म. आदि ठाणा ने चेन्नई से विहार किया है। वे पेद्दतुम्बलम् पार्श्व मणि तीर्थ पधारेंगे, जहाँ उनकी पावन निश्रा में पौष दशमी का भव्य कार्यक्रम अट्ठम आदि का संपन्न होगा।

0 पू. गणिनी प्रवरा श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. पूर्णप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा मुंबई शहर में बिराजमान है। वहाँ से गुंटुर की ओर विहार करेंगे।

0 पू. साध्वी श्री सुलक्षणाश्रीजी म. आदि ठाणा 4 ने सांचोर चातुर्मास पश्चात् नाकोडाजी की ओर विहार किया है। वहाँ उनकी निश्रा में ता. 27 दिसम्बर को बालोतरा से नाकोडाजी का एक दिवसीय संघ का आयोजन होगा। तथा ता. 28 व 29 दिसम्बर को दो दिवसीय शिविर का आयोजन होगा।

0 पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 7 बाडमेर कुशल वाटिका से विहार कर जोधपुर, बिलाडा, ब्यावर, अजमेर होते हुए ता. 4 दिसम्बर 2022 तक जयपुर पधारेंगे।

0 पू. साध्वी श्री सम्यग्दर्शनाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 ने इचलकरंजी में यशस्वी चातुर्मास संपन्न कर आकोला की ओर विहार किया है। वे दिसम्बर के तीसरे सप्ताह तक वहाँ पहुँचेंगे।

0 पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा ने खेतिया नगर में भव्य चातुर्मास संपन्न कर धूलिया होते हुए अमलनेर पधारे हैं। वहाँ से जलगांव की ओर विहार होने की संभावना है।

0 पू. साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म. आदि ठाणा चौहटन बिराज रहे हैं। मौन एकादशी के पश्चात् पाली की ओर विहार करेंगे।

0 पू. साध्वी श्री प्रियंवदाश्रीजी म. शुद्धांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा हैदराबाद के भव्य चातुर्मास की संपन्नता के पश्चात् कारवान दादावाडी में संपन्न प्रतिष्ठा महोत्सव में सानिध्यता प्रदान की। वहाँ से विहार कर पेद्दतुम्बलम् पार्श्वमणि तीर्थ पधारेंगे। पौष दशमी की आराधना वहीं होगी।

0 पू. साध्वी श्री शासनप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 सूरत पाल में यशस्वी चातुर्मास संपन्न कर विहार किया। वे ता. 28 नवम्बर 2022 को पालीताना पधार गये हैं। कुछ दिनों की स्थिरता के पश्चात् बाडमेर की ओर विहार करेंगे।

0 पू. साध्वी श्री प्रीतिसुधाश्रीजी म. आदि ठाणा 4 तिरपातूर से विहार कर पू. गणिनी श्री सुलोचनाश्रीजी म. के साथ पार्श्वमणि तीर्थ पधार रहे हैं।

0 पू. साध्वी श्री गुणरंजनाश्रीजी म. रामगंजमंडी में भव्य चातुर्मास की संपन्नता के पश्चात् विहार कर मन्दसौर पधारे हैं।

0 पू. साध्वी श्री विनीतयशाश्रीजी म. प्रशमिताश्रीजी म. अर्हम्निधिश्रीजी म. ठाणा 4 बालोतरा से विहार कर जहाज मंदिर पधारे, जहाँ उनकी पावन निश्रा में गुरु सप्तमी के मेले का भव्य आयोजन हुआ। वहाँ से विहार कर वे ता. 30 नवम्बर को पाटण पधारे। वहाँ से शंखेश्वर पधारेंगे। जहाँ उनकी पावन निश्रा में दादावाडी परिसर में मंडोवरा परिवार की ओर से निर्मित हो रहे जिन मंदिर का शिलान्यास समारोह होगा। साथ ही गोलेच्छा परिवार द्वारा निर्मित होने जा रहे काला भैरव मंदिर का भी शिलान्यास समारोह होगा। यह समारोह 5 दिसम्बर सोमवार को आयोजित होगा।

0 पू. साध्वी श्री प्रियस्मिताश्रीजी म. प्रियलताश्रीजी म. आदि ठाणा कोलकाता का चातुर्मास संपन्न कर अजीमगंज की ओर विहार कर रहे हैं। जहाँ होने वाले प्रतिष्ठा समारोह में अपनी सानिध्यता प्रदान करेंगे।

0 पू. साध्वी श्री प्रियकल्पनाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 ने फलोदी से नाकोडाजी की ओर विहार किया है।

0 पू. साध्वी श्री हेमरत्नाश्रीजी म. आदि ठाणा 5 डुठारिया के चातुर्मास के पश्चात् विहार कर सिवाना चंपावाडी पधारे हैं। वहाँ से पू. जयरत्नाश्रीजी म. ठाणा 2 चिकित्सा हेतु जोधपुर पधारे हैं। पू. श्री हेमरत्नाश्रीजी म. ठाणा 3 चंपावाडी बिराज रहे हैं।

0 पू. साध्वी श्री प्रियरंजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 पाली से विहार कर ब्यावर होते हुए अजमेर पधारे। वहाँ से विहार कर दिसम्बर के प्रथम सप्ताह तक जयपुर पधारेंगे।

0 पू. साध्वी श्री अमितगुणाश्रीजी म. ठाणा 2 धोरीमन्ना से विहार कर सिणधरी पधारे हैं। मौन एकादशी तक स्थिरता के पश्चात् नाकोडाजी पधारेंगे। पौष दशमी की आराधना वहाँ होगी।

0 पू. साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी म. आदि ठाणा 3 झुंझूनू से विहार कर जयपुर पधार गये हैं।

0 पू. साध्वी श्री नीलांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 उदयपुर के भव्य चातुर्मास की संपन्नता के पश्चात् भीलवाडा, बिजयनगर होते हुए मालपुरा पधारे हैं। वहाँ से विहार कर दिसम्बर के प्रथम सप्ताह में जयपुर पधारेंगे।

0 पू. साध्वी श्री प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म. ठाणा 3 अमलनेर चातुर्मास संपन्न कर धूलिया पधारे हैं।

0 पू. साध्वी श्री प्रियस्वर्णांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 6 नवसारी बिराज रहे हैं।

0 पू. साध्वी श्री मयूरप्रियाश्रीजी म. आदि ठाणा 5 सूरत बिराज रहे हैं।

0 पू. साध्वी श्री विरलप्रभाश्रीजी म. ठाणा 3 नंदुरबार से विहार कर शहादा पधारे हैं।

पत्थर तब तक सलामत है, जब तक वो पर्वत से जुड़ा है।
पत्ता तब तक सलामत है, जब तक वो पेड़ से जुड़ा है।
इंसान तब तक सलामत है, जब तक वो परिवार से जुड़ा है।
क्योंकि परिवार से अलग होकर आजादी तो मिल जाती है,
लेकिन संस्कार चले जाते हैं।।

जटाशंकर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

जटाशंकर जेल में था। वह एक झूठे केस में फंस गया था। पुलिस वालों की बातचीत से उसे लगता था कि मौत की सजा होगी। वह मरना नहीं चाहता था।

उसने अपने वकील से रोते हुए कहा- चाहे जितने रुपये ले लो। जज को जितनी भी राशि देनी पडे दे देना... उसे खरीद लेना... मगर मुझे मौत से बचाना। आप भी मेरी सारी संपत्ति ले लो, पर मुझे मौत की सजा से बचाना... भले उम्र कैद की सजा करवा देना।

वकील बोला- तुम चिंता मत करो। मैं पूरी कोशिश करूँगा।

दूसरे ही दिन उसकी पेशी थी। उसे उम्र कैद की सजा हो गई।

जटाशंकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ। चलो... मौत की सजा नहीं हुई।

जटाशंकर ने वकील को धन्यवाद दिया। उसने कहा- मैं आपको पुरस्कार भी दूंगा। आपने बहुत अच्छी बहस की। मुझे मौत से बचा लिया।

वकील ने कहा- जज साहब को समझाने में पसीना आ गया।

जटाशंकर बोला- अच्छा क्या हुआ! पूरी बात बताओ।

वकील बोला- जज साहब ने सारे गवाहों के बयान सुन लिये थे। उन्होंने अपने मन में तय कर लिया था कि तुम निर्दोष हो। तुम्हें फंसाया गया है। इस कारण वे तुम्हें बाइज्जत बरी करना चाहते थे।

पर मैंने तुम्हारी इच्छा को जज साहब के सामने प्रकट करते हुए कहा- साहब! आप लाख रुपये ले लो पर उम्र कैद की सजा तो आपको सुनानी ही पडेगी।

बहुत मुश्किल से माने।

जटाशंकर रो पडा। अरे! वे जब मुझे बरी करना चाहते थे तो फिर उम्र कैद की सजा किसलिये करवाई। मैंने उम्रकैद की सजा मौत के बदले मांगी थी, न कि बरी करने के बदले में।

परमात्मा हमें बरी करना चाहते हैं। सारे दुःखों से... भव भ्रमणा से... पर हम उम्र कैद की सजा के लिये प्रसन्नता से तैयार हो जाते हैं। हमें मुक्ति नहीं चाहिये... हमें तो स्वर्ग के सुख चाहिये। यदि बरी होना है अर्थात्

जो आसानी से मिल जाता है, वो हमेशा तक नहीं रहता,
जो हमेशा तक रहता है, वो आसानी से नहीं मिलता।

शुरुआत करने के लिए महान होने की जरुरत नहीं है।
परंतु महान होने के लिए शुरुआत करने की जरुरत होती है।

मानसरोवर जयपुर में श्री सुमतिनाथ जिनालय की प्रतिष्ठा और बैंगानी परिवार द्वारा अपूर्व लाभ

मुनि मलयप्रभसागरजी म. के
आचारांग योगोद्वहन पर अभिनन्दन

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal Registration no. RJ/SRO/9625/2021-2023 Date of Posting 7th

श्री आदिनाथाय नमः
अनंतलब्धिनिधानाय श्री श्री गौतमस्वामिने नमः
खरतरबिरुदधारक श्री जिनेश्वरसूरिभ्यो नमः
दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त–मणिधारी जिनचन्द्र–जिनकुशल–जिनचन्द्रसूरि सद्गुरुभ्यो नमः
पू. गणनायक श्री सुखसागर–सद्गुरुभ्यो नमः

श्री जयपुर नगरे

श्री मोहनवाडी अरिहंत वाटिका मध्ये
गगनचुम्बी ऋषभदेव जिन प्रासाद एवं दादावाडी के
भव्यातिभव्य अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव उपाध्याय पद प्रदान महोत्सव एवं दीक्षा महोत्सव प्रसंगे

सकल श्री संघ को भावभरा ससम्मान आमंत्रण

पावन निश्रा

पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक मरूधर मणि
खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.
पूज्य नमिउण तीर्थ प्रेरक आचार्य श्री जिनपीयूषसागरसूरिजी म.सा. आदि ठाणा

पावन प्रेरणा
पूजनीया प्रवर्तिनी प्रवरा श्री विचक्षणश्रीजी म.सा. की शिष्या
पूजनीया मरूधर ज्योति श्री मणिप्रभाश्रीजी म.सा.

प्रतिष्ठा
वि. 2079
पौष वदि 3
रविवार
11 दिसम्बर 2022

निवेदक

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, जयपुर

अरिहन्त वाटिका, मोहनबाड़ी, गलता गेट चौराहा, दिल्ली बाईपास, जयपुर-302003
फोन : 0141-2640123, मो. 9530179959

संघ अध्यक्ष	संघ मंत्री	संयोजक
प्रकाशचंद लोढा	देवेन्द्रकुमार मालू	विमलचंद सुराणा

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 096496 40451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com

श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक श्रीमती पुष्पा ए. जैन द्वारा श्री एस. कम्प्यूटर सेन्टर, हनुमानजी मंदिर के सामने वाली गली, जालोरी गेट जोधपुर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, माण्डवला, जि जालोर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - श्रीमती पुष्पा ए. जैन
www.jahajmandir.org
शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408